प्रकृति संरक्षण

समाचार पत्रिका

खंड 4, अंक 1, जनवरी-मार्च, 2023

यदि आप हमारी विचारधारा में विश्वास करते हैं और पर्यावरण के लिए कदम उठाना चाहते हैं, तो हम आपका हमारे संगठन में शामिल होने के लिए स्वागत करते हैं और साथ मिलकर हम पर्यावरण को बचा सकते हैं। **Visit- https://stenvironment.org/**

लिंक का अनुसरण करें, सदस्यता चुनें और फॉर्म भरें।

हमारे बारे में-

पर्यावरण बचाओ संगठन (एसटीई)

पर्यावरण बचाओ संगठन(एसटीई)का उद्देश्य पर्यावरण, स्वास्थ्य और पानी के बारे में समाज में जागरूकता फैलाना है। यह 19 नवंबर 1990 को स्थापित और पंजीकृत किया गया था। आर्सेनिक के प्रभाव को कम करने और आर्सेनिक मुक्त पेयजल उपलब्ध कराने के लिए (एसटीई) ने पिछले 33 वर्षों में विभिन्न संगठनों जैसे अखिल भारतीय स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थान और भारत कनाडा पर्यावरण सुविधा, डीआरडीओ, रक्षा मंत्रालय, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग(डीएसटी), भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम), अहमदाबाद के साथ सहयोग किया है।

इस संगठन का उद्देश्य वर्तमान और भावी पीढ़ियों को विभिन्न पर्यावरणीय खतरों से बचाना है। अपने उद्देश्यों की सुचारू रूप से पूर्ति हेतु एसटीई पोस्टर प्रतियोगिताओं, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं, विज्ञान प्रदर्शनियों और वेबिनार, सम्मेलनों (राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय), कार्यशालाओं, सेमिनारों एवं अन्य जागरूकता कार्यक्रमों जैसे विभिन्न इंटरैक्टिव सत्रों का सक्रिय रूप से आयोजन करती रहती है।

HUMBLE APPEAL

FOR DONATING FUNDS FOR
"THE PURULIA PROJECT FOR TOILETS AND DRINKING-CUM-WASH WATER UNITS"

Dear all,

Hope this message finds you in good health.

'Alone we can do so little; together we can do so much': these words of Helen Keller depict the resounding truth that we can make a big impact, by coming together for the larger good of the society. Save The Environment (STE), a registered society for research, awareness and social development headquartered in Kolkata, West Bengal abides by the said quote and we at STE are continually working towards building a better and healthier environment for all (Please visit for details: https://www.stenvironment.org)

As part of our humble social pursuit, we plan to undertake the 'Purulia Project for Toilets and Drinking-cum-Wash water units' that will benefit the needy households at Sabar Tola, Bonkanali village, Purulia, West Bengal- an economically weaker ethnic community of the state. Since long, the families residing in this area have been facing severe difficulties due to the lack of proper water supply and sanitation facilities. This is ironic and in contrast to the wake of urbanization, especially in the post-pandemic world, where green environment, clean water and proper hygiene are the absolute requirements for a healthy life. In this regard, STE requests all esteemed patrons to kindly come forward and support us in accomplishing our efforts for enabling access to basic amenities like water and sanitation for the residents of Sabar Tola. Your generous and benevolent donation will be a big help for us to accomplish our endeavour, and together we can succeed in bringing a smile to several underprivileged persons of the community.

We earnestly request your support and thank you for being with us in our efforts!

P.S.: Details of the proposed work are given in the pamphlet. All donations.will be covered under 80G.

Please feel free to reach us in case of any query or concern.

With humble regards

Contact details:
Phone: 9871372350; 9830779260 • Email: info@stenvironment.org
Account details for donating funds:
ONLINE PAYMENT:
Name of the Account: **SAVE THE ENVIRONMENT**
Account Number: **38041963371**
Bank and Branch: State Bank of India, Lake Town, Kolkata
IFSC Code: SBIN0001506 OR GOOGLE PAY to: **Mrs. Chanda Basu**; Mobile 9830779260

विनम्र अपील

"पुरुलिया परियोजना के शौचालय और पेय – सह - धोने के पानी की इकाइयां" के लिए धन दान करने के लिए

प्रिय सभी,

आशा है कि यह संदेश आपको अच्छे स्वास्थ्य में मिलेगा।

'अकेले हम इतना कम कर सकते हैं; एक साथ मिलकर हम इतना कुछ कर सकते हैं': हेलेन केलर के ये शब्द उस ज़बरदस्त सच्चाई को दर्शाते हैं कि हम समाज की व्यापक भलाई के लिए एक साथ आकर एक बड़ा प्रभाव डाल सकते हैं। सेव द एनवायरनमेंट (STE), अनुसंधान, जागरूकता और सामाजिक विकास के लिए एक पंजीकृत सोसायटी है जिसका मुख्यालय कोलकाता, पश्चिम बंगाल में है और उक्त उद्धरण का पालन करता है और हम STE में सभी के लिए एक बेहतर और स्वस्थ वातावरण बनाने की दिशा में लगातार काम कर रहे हैं। (विवरण के लिए कृपया देखें : *https://www. stenvironment.org*)
हमारी विनम्र सामाजिक खोज के हिस्से के रूप में, हम 'शौचालय और पीने के पानी की इकाइयों के लिए पुरुलिया परियोजना' शुरू करने की योजना बना रहे हैं, जो आर्थिक रूप से कमजोर जातीय समुदाय, सबर टोला, बोंकनाली गांव, पुरुलिया, पश्चिम बंगाल में जरूरतमंद परिवारों को लाभान्वित करेगा। राज्य की। लंबे समय से इस क्षेत्र में रहने वाले परिवारों को पानी की उचित आपूर्ति और स्वच्छता सुविधाओं के अभाव में भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। यह विडंबनापूर्ण है और शहरीकरण के विपरीत, विशेष रूप से महामारी के बाद की दुनिया में, जहां हरित पर्यावरण, स्वच्छ पानी और उचित स्वच्छता स्वस्थ जीवन के लिए परम आवश्यकताएं हैं। इस संबंध में, एसटीई सभी सम्मानित संरक्षकों से अनुरोध करता है कि कृपया आगे आएं और सबर टोला के निवासियों के लिए पानी और स्वच्छता जैसी बुनियादी सुविधाओं तक पहुंच को सक्षम करने के हमारे प्रयासों को पूरा करने में हमारा समर्थन करें। आपका उदार और परोपकारी दान हमारे प्रयास को पूरा करने में हमारे लिए एक बड़ी मदद होगी, और साथ में हम समुदाय के कई वंचित व्यक्तियों के चेहरे पर मुस्कान लाने में सफल हो सकते हैं।

हम ईमानदारी से आपके समर्थन का अनुरोध करते हैं और हमारे प्रयासों में हमारे साथ रहने के लिए धन्यवाद!

पुनश्च: प्रस्तावित कार्य का विवरण पैम्फलेट में दिया गया है। सभी दान। 80G के तहत कवर किया जाएगा।

कृपया किसी भी प्रश्न या चिंता के मामले में हमसे बेझिझक संपर्क करें।

विनम्र सम्मान के साथ,

सम्पर्क करने का विवरण:
फोन: 9871372350;9830779260 • ईमेल: info@stenvironment.org
फंड दान करने के लिए खाता विवरण:
ऑनलाइन भुगतान:
खाते का नाम: पर्यावरण बचाओ
खाता संख्या: 38041963371
बैंक और शाखा: भारतीय स्टेट बैंक, लेक टाउन, कोलकाता
IFSC कोड: SBIN0001506 या GOOGLE PAY to: श्रीमती छंदा बसु; मोबाइल 9830779260

पर्यावरण, जल, कृषि, वहनीयता और स्वास्थ्य (ईवॉश-2022)-अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं एसटीई की चौथी वार्षिक बैठक

12 - 13 जनवरी, 2023

शैक्षिक क्षेत्र में एक नियमित वार्षिक संगोष्ठी– ईवॉश–2022 का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के आयोजक एसटीई सहित रॉयल सोसाइटी ऑफ केमिस्ट्री, नॉर्थ इंडिया सेक्शन और सीएसआईआर–नेशनल एनवायरनमेंटल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट रहे।

इस वर्ष का सम्मेलन पर्यावरण वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और अंतरराष्ट्रीय ख्याति के शोधकर्ताओं के बीच एक उच्च विचार–मंथन के माध्यम से पर्यावरण नीतियों और कार्यान्वयन, भू–विविधता मूल्यांकन और प्रभाव, पर्यावरण अर्थशास्त्र एवं हरित रसायन विज्ञान के निर्माण जैसे महत्त्वपूर्ण उप–विषयों पर आधारित था। जलवायु और पर्यावरण संबंधी चिंताओं से संबंधित विभिन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिए संगोष्ठी अनुसंधान प्रयासों और अंतःविषय विचार–विमर्श के निर्माण के लिए एक सहयोगी मंच साबित हुई।

स्वागत भाषण
डॉ क्षिप्रा मिश्रा, संयोजक, EWASH 2022

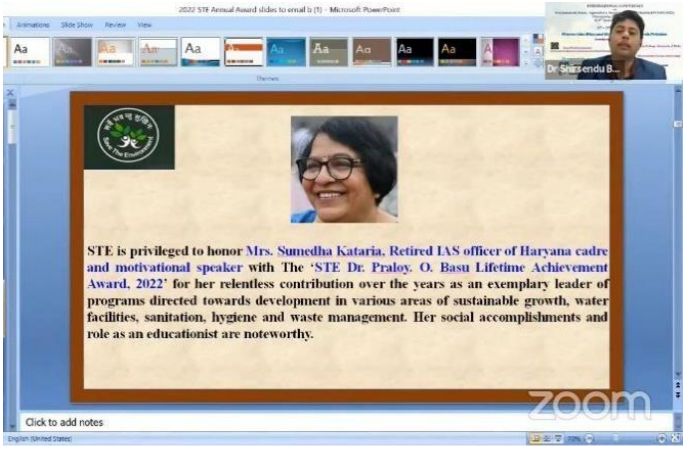

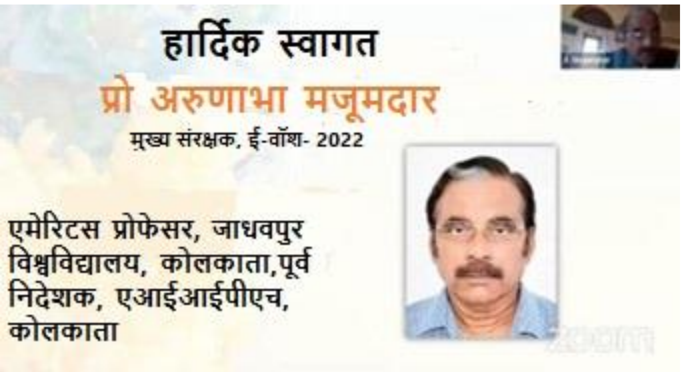

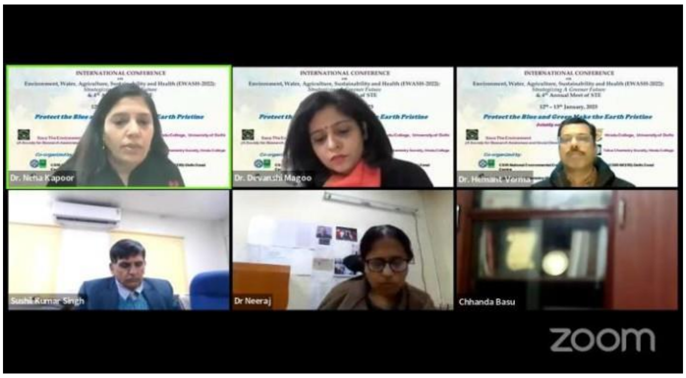

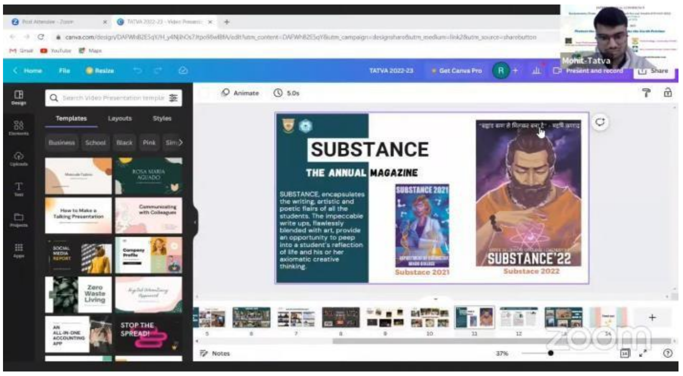

डॉ. रमेश कुमार, पृथ्वी संसाधन और पर्यावरण इंजीनियरिंग विभाग, हन्यांग विश्वविद्यालय, कोरिया गणराज्य द्वारा 'धातु आयनों के पुनर्चक्रण के लिए हाइब्रिड तकनीक', विषय पर व्याख्यान दिया गया। प्रोफेसर शुभंकर सुमन, एसओएम–ऑन्कोलॉजी विभाग, जॉर्जटाउन, वाशिंगटन डी.सी. द्वारा 'अंतरिक्ष विकिरण द्वारा प्रेरित एजिंग और कैंसर के जोखिम' विषय पर विचार व्यक्त किए गए। ऑनलाइन मोड में दो दिनों तक चलने वाली इस संगोष्ठी में अनेक आमंत्रित व्याख्यान, पोस्टर और मौखिक प्रस्तुतियाँ, एसटीई पुरस्कार समारोह और छात्रों हेतु बहुत–सी गतिविधियाँ सम्मिलित की गई थीं। इस संगोष्ठी के सफल आयोजन से सभी वक्ताओं, श्रोताओं एवं प्रतिभागियों में पर्यावरण और वहनीयता के विभिन्न पहलुओं के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता बढ़ी।

एसटीई वार्षिक पुरस्कार–2022 भी ऑनलाइन घोषित किए गए। इस वर्ष के पुरस्कारों का विवरण निम्नलिखित है।

(एसटीई) डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम पुरस्कार

डॉ. ए.बी. समुई, विजिटिंग फैकल्टी, जेनेटिक इंजीनियरिंग, पॉलिमर और सरफेस इंजीनियरिंग विभाग, आईसीटी, मुंबई और पूर्व परियोजना निदेशक, अतिरिक्त निदेशक और वैज्ञानिक 'जी', एनएमआरएल (डीआरडीओ, अंबरनाथ)

(एसटीई) डॉ. प्रलॉय ओ बसु लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड

प्रोफेसर सस्मिता सामंता, केआईआईटी डीम्ड यूनिवर्सिटी, भुवनेश्वर की कुलपति

सुश्री सुमेधा कटारिया, हरियाणा कैडर की सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी और प्रेरक वक्ता

(एसटीई) इंटरनेशनल अचीवर अवार्ड

प्रो. संजय जोशी, प्रोफेसर, औद्योगिक और विनिर्माण इंजीनियरिंग विभाग, पेन स्टेट यूनिवर्सिटी, यूएसए डॉ. रमेश कुमार, पोस्टडॉक्टोरल रिसर्च फेलो, पृथ्वी संसाधन और पर्यावरण इंजीनियरिंग विभाग, हनयांग विश्वविद्यालय, सियोल, कोरिया गणराज्य

डॉ. कृष्णा शर्मा, रिसर्च फेलो, स्कूल ऑफ केमिस्ट्री, यूनिवर्सिटी ऑफ लीड्स, यूके।

डॉ. सैकत कुमार बसु, पीएफएस, कार्यकारी अनुसंधान निदेशक, लेथब्रिज विश्वविद्यालय, अल्बर्टा, कनाडा डॉ. सौम्या डबराल, उत्पाद विकास वैज्ञानिक, बीएएसएफ, नीदरलैंड

(एसटीई) फेलोशिप पुरस्कार

डॉ. नरेंद्र सिंह, अतिरिक्त निदेशक एवं वैज्ञानिक 'एफ', डीआईएचएआर, डीआरडीओ, सरकार। भारत की

प्रो. राजिंदर सिंह चौहान, डीन, सेंटर फॉर लाइफ साइंसेज, महिंद्रा यूनिवर्सिटी, हैदराबाद प्रो. श्रीनिवास पटनायक, प्रोफेसर, स्कूल ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, केआईआईटी डीम्ड यूनिवर्सिटी भुवनेश्वर

(एसटीई) ग्रीन एक्सीलेंस अवार्ड

प्रोफेसर शची शाह, निदेशक, ʻʻव्ऊे और पर्यावरण अध्ययन, इग्नू, नई दिल्ली में प्रोफेसर

डॉ. मौलिन पी. शाह, मुख्य वैज्ञानिक एवं प्रमुख, एनवायरो टेक्नोलॉजी लिमिटेड, अंकलेश्वर, गुजरात

डॉ. विवेक वर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, सामग्री विज्ञान और इंजीनियरिंग विभाग, आईआईटी–कानपुर प्रो. मनोज बी. गवांडे, एसोसिएट प्रोफेसर, औद्योगिक और इंजीनियरिंग विभाग। रसायन विज्ञान, आईसीटी– मुंबई, जालना श्री नथानिएल भाकुपर डखर, सलाहकार (जल

संसाधन प्रबंधन), म्यू गामा कंसल्टेंट्स, नई दिल्ली

(एसटीई) शैक्षणिक और अनुसंधान में उत्कृष्टता के लिए मेधावी पुरस्कार

प्रोफेसर सईद अहमद, प्रमुख, खाद्य प्रौद्योगिकी विभाग, फार्माकोग्नॉसी और फाइटोकेमिस्ट्री के प्रोफेसर, बीएनपीएल, जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय, दिल्ली

(एसटीई) जल पुरस्कार

प्रोफेसर पपीता दास, प्रोफेसर, केमिकल इंजीनियरिंग विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता
डॉ. एमवीएसएस गिरिधर, प्रोफेसर एवं प्रमुख, जल संसाधन केंद्र, आईएसटी, जेएनटीयू, हैदराबाद
श्री रामवीर तंवर, 'पॉन्ड मैन', पर्यावरणविद् और टेडएक्स स्पीकर, जी. नोएडा

(एसटीई) महिला उत्कृष्टता पुरस्कार

डॉ. नीरज टंडन, प्रधान अन्वेषक, औषधीय पादप प्रभाग, आईसीएमआर
श्रीमती अपर्णा पुजारी, इको–उद्यमी, ईला इको प्रोडक्ट्स, धारवाड़
डॉ. (श्रीमती) एम. जी. सुजाना, मुख्य वैज्ञानिक, पर्यावरण एवं स्थिरता विभाग, सीएसआईआर–आईएमएमटी, भुवनेश्वर
डॉ. नूर अफशां खान, मुख्य वैज्ञानिक, पर्यावरण एवं स्थिरता विभाग, सीएसआईआर–आईएमएमटी, भुवनेश्वर
(एसटीआई) पर्यावरण पुरस्कार के लिए सर्वश्रेष्ठ विचार– नवाचार– प्रौद्योगिकी
डॉ. तपन कुमार राउत, प्रधान वैज्ञानिकध्प्रमुख, प्रौद्योगिकी नेतृत्व क्षेत्र, टाटा (एसटीई)एल लिमिटेड, जमशेदपुर, भारत
प्रोफेसर सूरज के. त्रिपाठी, एसोसिएट डीन और एसोसिएट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ केमिकल टेक्नोलॉजी, केआईआईटी डीम्ड यूनिवर्सिटी, भुवनेश्वर

(एसटीई) युवा शोधकर्ता (संकाय) पुरस्कार

डॉ. राबिया परवीन, सहायक प्रोफेसर, फार्मास्यूटिक्स विभाग, एसपीईआर, जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. शिरसेन्दु बनर्जी, सहायक प्रोफेसर, स्कूल ऑफ केमिकल टेक्नोलॉजी, केआईआईटी स्कूल ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, भुवनेश्वर
डॉ. गौरव गौतम, सहायक प्रोफेसर, फार्मेसी विभाग, आईआईएमटी विश्वविद्यालय, मेरठ

(एसटीई) युवा शोधकर्ता पुरस्कार

श्री सायंतन सिन्हा, अनुसंधान विद्वान, पर्यावरण केंद्र, आईआईटी गुवाहाटी

(एसटीई) सर्वश्रेष्ठ स्कूल प्रिंसिपल पुरस्कार

सि(एसटीई)आर रोज फातिमा एसी, प्रिंसिपल, कार्मेल कॉन्वेंट हाई स्कूल एमएएमसी, दुर्गापुर

(एसटीई) सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार

सुश्री सुमिता चक्रवर्ती, सहायक। शिक्षक (बंगाली), हिरेंद्र लीला पत्रनवीस स्कूल, कोलकाता
डॉ. वैशाली मिश्रा, विभागाध्यक्ष, रसायन विज्ञान, आईटीएल पब्लिक स्कूल, द्वारका, नई दिल्ली

(एसटीई) एनजीओ के लिए मानवतावादी पुरस्कार

स्ट्रेंजर्सइंडिया को पत्र
सीध्ओ सुश्री आरुषि कटारिया, मुख्य पदाधिकारी, कुर्ला डब्ल्यू, मुंबई

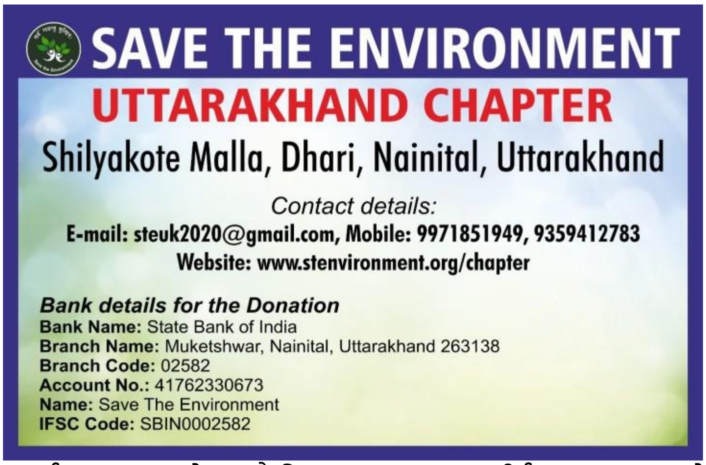

एसटीई को यह घोषणा करते हुए अत्यंत गर्व का अनुभव हो रहा है कि उत्तराखंड का एसटीई राज्य-अध्याय खोल दिया गया है और वहां गतिविधियाँ शुरू करने के लिए हम तत्पर हैं। यह अनुरोध किया जाता है कि जो लोग एसटीई के शासनादेश के तहत कोई कार्यक्रम/संगोष्ठी/सम्मेलन या अन्य कोई संबंधित आयोजन करना चाहते हैं, उनका पहाड़ों की इस नवीन यात्रा में स्वागत है।

एंथेलिया

रिपोर्ट : **वृंदा गुप्ता**

रसायन विभाग, हिंदू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय ने डीबीटी स्टार कॉलेज स्कीम के तत्वावधान में एसटीई के सहयोग से 11 जनवरी 2023 को सतत विकास के लिए इको–फ्रेंडली स्टार्टअप उत्पादों की एक श्रृंखला पर एंथेलियाः एक कार्यशाला आयोजित की।

कार्यशाला का आयोजन आईटीएल पब्लिक स्कूल द्वारका, दिल्ली की डॉ. वैशाली मिश्रा और सुश्री मधुप्रीत के कुशल मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य महत्वपूर्ण सोच और ''हैंड्स–ऑन'' प्रायोगिक कार्य में सुधार करना और छात्रों को अधिक से अधिक पर्यावरण के अनुकूल और प्राकृतिक उत्पादों को चुनने के लिए प्रोत्साहित करना था।

कार्यशाला की शुरुआत डॉ. वैशाली द्वारा एक ऊर्जावान प्रस्तुति द्वारा की गई थी जिसमें उन्होंने न केवल पर्यावरण के अनुकूल और रसायन मुक्त उत्पादों के बारे में बताया बल्कि हमें अपने स्टार्टअप के लिए प्रेरित भी किया। प्रायोगिक सत्र में छात्रों ने प्रयोगशाला में अपने हाथों से 3 पर्यावरण अनुकूल उत्पाद तैयार किए। सबसे पहले छात्रों ने रसायन रहित साबुन की टिकिया तैयार की। साबुन की छड़ें न केवल पैराबीन, सल्फेट्स और ट्राईक्लोसन जैसे जहरीले रसायनों से रहित थीं, बल्कि प्राकृतिक रूप से निकाले गए पदार्थों से बनी थीं, जो उन्हें त्वचा के लिए स्वस्थ बनाते थे। उत्पादित साबुन कैंसर, त्वचा में जलन और रूखेपन के खतरों को पूरी तरह समाप्त कर देते हैं। बेकिंग सोडा, सामान्य नमक, साइट्रिक एसिड, कॉर्न स्टार्च इत्यादि का उपयोग करके एनाल्जेसिक बाथ–बम तैयार किए गए थे।

एनाल्जेसिक ऐसी दवाएं हैं जो दर्द को खत्म या कम करती हैं, जो रोग संबंधी स्थितियों के साथ उत्पन्न होता है। इप्सॉम नमक चिकित्सा क्षेत्र में विभिन्न फार्मास्युटिकल प्रभाव उत्पन्न करता है। यह नसों पर प्रभाव डालकर मॉंसपेशियों की ऐंठन के उपचार के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अंत में, पोटाश फिटकरी, सेंधा नमक, कपूर आदि का उपयोग करके फ्लोर क्लीनर तैयार किया गया। इनका मिश्रण बनाया गया और छानने के बाद इसे एक बोतल में स्थानांतरित कर दिया गया। फ्लोर क्लीनर किसी भी जहरीले रसायन से मुक्त है और किसी भी तरह से मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नहीं है।

कार्यशाला ने छात्रों को न केवल पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों का चयन करने के लिए बल्कि स्टार्ट–अप और एक स्थायी भविष्य की दिशा में हर संभव कदम उठाने के लिए प्रोत्साहित किया। वर्कशॉप के दौरान विद्यार्थियों को बहुत अच्छा अनुभव हुआ।

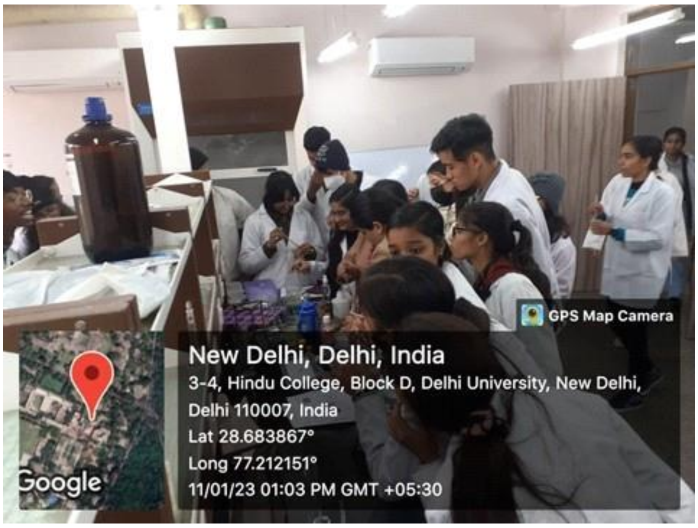

नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करके एसटीई के आजीवन सदस्य बनें

https://www.stenvironment.org/national/life-time-member-ship-online

पर्यावरण बचाओ संगठन (एसटीई)

(अनुसंधान, जागरूकता एवं सामाजिक विकास के पथ हेतु एक संस्था)

मुख्य एवं पंजीकृत कार्यालयः 12, **डायमंड हार्बर रोड, कोलकाता** -700063 • **मोबाइलः** 9830779260, 9871372350 ई-mail: save1990env@yahoo.co.in; info@stenvironment.org • वेबसाइटः www.stenvironment.org

जड़ी-बूटियों से स्वास्थ्य तक

रिपोर्ट : **वृंदा गुप्ता**

एसटीई के सहयोग से डीबीटी स्टार कॉलेज योजना के तत्वावधान में रसायन विज्ञान विभाग हिंदू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय प्रस्तुत करता हैः **जड़ी–बूटियों से स्वास्थ्य तकः विलायक–आधारित निष्कर्षण प्रोटोकॉल पर एक कार्यशाला ।** डॉ० जिग्नी मिश्रा के कुशल मार्गदर्शन में कार्यशाला सफलतापूर्वक आयोजित की गई थी। इसका उद्देश्य महत्वपूर्ण सोच और ''हैंड्स–ऑन'' प्रायोगिक कार्य में सुधार करना और छात्रों को कृत्रिम दवाओं की तुलना में जड़ी–बूटियों के अधिक से अधिक उपयोग को चुनने के लिए प्रोत्साहित करना था। कार्यशाला में , छात्रों ने कैप्सूल के रूप में न्यूट्रास्यूटिकल्स निकाले।

जड़ी–बूटियों में मेटाबोलाइट्स का एक समृद्ध भंडार होता है जो अत्यधिक कठोर पर्यावरणीय परिस्थितियों में उनके अनुकूलन को सक्षम बनाता है, जैसे कि गर्मी का तनाव, ठंड का तनाव, कम ऑक्सीजन का स्तर, आदि। वे प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त होते हैं। हर्बल स्रोत को महीन पाउडर के रूप में कुचला गया और फिर तौल कर 50% इथेनॉल में घोल दिया गया। मिश्रण को लगभग 15 मिनट के लिए सेंट्रीफ्यूज किया गया और फिर एक रोटेटरी इवेपोरेटर के उपयोग से केंद्रित किया गया। शुद्धिकरण के बाद, अर्क को गोलियों या कैप्सूल के रूप में न्यूट्रास्यूटिकल्स में तैयार किया जा सकता है।

कार्यशाला ने छात्रों को न केवल सिंथेटिक और रासायनिक रूप से व्युत्पन्न उत्पादों की तुलना में अधिक हर्बल उत्पादों का चयन करने के लिए प्रोत्साहित किया बल्कि सभी के चेहरों पर संतुष्टि भी देखी गई, जिसने वास्तव में कार्यशाला को एक बड़ी सफलता प्रदान की।

हमारे ग्रह के फेफड़े जल रहे हैं

- अमेजन रेनफॉरेस्ट मरणासन्न की ओर- पतन का एक अपरिवर्तनीय चक्र

डॉ. वैशाली मिश्रा
संपादक एसटीई

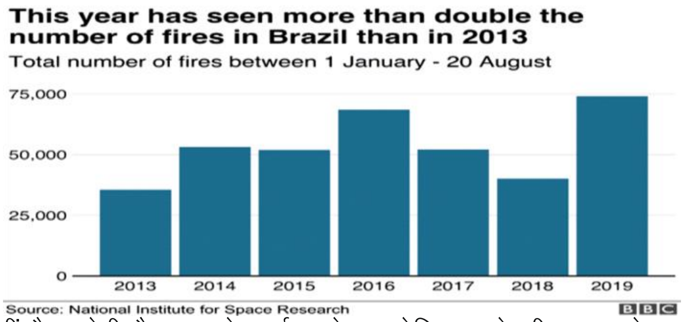

अमेजन वर्षावन बड़े पैमाने पर अदम्य जंगल का एक विशाल पथ है। पृथ्वी का सबसे जैवविविध क्षेत्र, पौधों और पेड़ों से भरा हुआ और सभी प्रकार और आकार के जानवरों से भरा हुआ है– जिनमें कई अज्ञात पशु–पक्षी भी शामिल हैं।

यह दुनिया का सबसे बड़ा मुख्य वन भी है, जो उत्तर दक्षिण अमेरिका में 2 मिलियन वर्ग मील से अधिक में फैला है, मुख्य रूप से ब्राजील में साथ ही पेरू, कोलंबिया और 6 अन्य देशों में भी।

यद्यपि यह 50 मिलियन वर्षों से अस्तित्व में है, अमेजॅन वर्षा वन अब मानवीय गतिविधियों से खतरे में है, जिसमें वन्य–आग का लगना, तेल, गैस, Cu, Fe और Au हेतु खनन प्रक्रिया भी सम्मिलित हैं।

हर साल अमेजन के जंगल में आग लगती है, लेकिन साल 2019 में, अमेजन वर्षावन में 15 अगस्त से 9500 से अधिक अलग–अलग तरह की आग जल रही है, दुनिया की ऑक्सीजन की भारी मात्रा रखने वाला वन इतनी तेजी से जल रहा है, जैसा वैज्ञानिकों ने पहले कभी नहीं देखा था। ब्राजील के राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान ने इस वर्ष अब तक 76000 से अधिक आग लगने की घटनाएं दर्ज की हैं – जो पिछले वर्ष की तुलना में 84% अधिक है।

670 मिलियन हेक्टेयर जंगल (60%) में अमेज का सबसे बड़ा हिस्सा औरों की तुलना में अधिक प्रजातियों का घर है। इसे अक्सर ''पृथ्वी के फेफड़े'' के रूप में जाना जाता है क्योंकि दुनिया की 20% ऑक्सीजन यहीं पैदा होती है। हवा से कार्बन को अवशोषित करने की क्षमता के कारण ग्लोबल वार्मिंग के खिलाफ लड़ाई में ग्रह को महत्वपूर्ण माना जाता है। लेकिन अन्य पारिस्थितिक तंत्रों के विपरीत, वैज्ञानिकों का कहना है कि अमेजन में जलना प्राकृतिक नहीं है, वनों की कटाई प्रमुख कारक है। विश्व वन्यजीव कोष (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ) का अनुमान है कि यदि वनों की कटाई की वर्तमान दर जारी रहती है तो 2030 तक अमेजॅन का एक चौथाई से अधिक भाग बिना पेड़ों के होगा। अमेजॅन वर्षावन क्षेत्रीय और वैश्विक जलवायु में एक महत्वपूर्ण जटिल भूमिका निभाता है।

पेड़ अपनी जड़ों के माध्यम से बारिश के पानी को अंदर लेते हैं और इसे चंदवा में ले जाते हैं और इसे हवा में छोड़ देते हैं, इस प्रक्रिया को वाष्पीकरण कहा जाता है। पेड़ वाष्पशील कार्बनिक यौगिक (वीओसी) भी छोड़ते हैं जो बड़े कणों के रूप में प्रतिक्रिया करते हैं और ये कण बादलों के निर्माण के लिए न्यूक्लिएशन बिंदुओं के रूप में कार्य करते हैं और अधिक वर्षा की ओर ले जाते हैं। इस पैटर्न को वर्षावन में सैकड़ों अरबों पेड़ों से गुणा करें और पानी के पुनर्चक्रण और वर्षा पैदा करने का एक शक्तिशाली तंत्र बनाया जाता है। यह ब्राजील में कृषि को बनाए रखने में मदद करता है।

लेकिन वनों की कटाई और जंगल की आग अमेजन वर्षावन को मरने वाले परिदृश्य की ओर धकेल रही है। वर्षा के बिना, वनस्पति को पानी नहीं मिलेगा और वनस्पतियां कमजोर हो जाएंगी और ये कीटों और मक्खियों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाएंगी।

अमेज़ॅन की ताकत बढ़ जाएगी और एक लहर परिधि पर शुरू हो जाएगी और पूरे घने उष्णकटिबंधीय जंगल को 'सवाना' बना देगी। यह चक्र हमारे इनपुट के बिना जारी रहेगा। यह एक परिदृश्य है जिसे 'फ़ॉरेस्ट डाइबैक' के रूप में जाना जाता है।

यह अंततः होलोसीन विलोपन का कारण बनेगा यानि मुख्य रूप से मानव गतिविधि के कारण होने वाला छठा सामूहिक विलोपन।

शानदार फूलों के खिलने से लैंडस्केप परिवर्तन

डॉ सायकत कुमार बासु

पीएफएस, लेथब्रिज अल्बर्टा कनाडा

email:saikat.basu@alumni.uleth.ca

पुरुलिया जिले (पश्चिम बंगाल, भारत) के पूरे परिदृश्य में बंगाली में 'फ्लेम ऑफ द फॉरेस्ट (ब्यूटिया मोनोस्पर्मा, फैबेसी) के शानदार फूलों को आमतौर पर 'पोलाश' कहा जाता है। यह फलीदार पेड़ मार्चध्अप्रैल के दौरान खिलता है और परिदृश्य को एक अद्भुत स्वप्नभूमि में बदल देता है। पुरुलिया की यह स्मारकीय प्राकृतिक सुंदरता एक बड़ा पर्यटक आकर्षण है। फूलों के विशिष्ट लाल रंग के साथ सैकड़ों और हजारों पेड़ पूरी तरह से खिले हुए हैं, दूर से जंगलों और पहाड़ी पर आग लगने का एक सम्मोहित करने वाला भ्रम पैदा करता है। तीन अलग–अलग रंग की भिन्नताएं देखी जाती हैं। सबसे आम रंग लाल होता है जिसके बाद कभी–कभी पीले रंग की किस्में होती हैं। सफेद फूल प्रकृति में सबसे दुर्लभ होते हैं। पोलाश के अलावा, अन्य फैबेसी परिवार के सदस्य भी सुंदर चमकीले लाल फूलों वाले होते हैं जैसे कि कोरल टी (एरिथ्रिनिया वेरिएगाटा), गुलमोहोर (डेलोनिक्स रेजिया), कृष्णाचुरा (कैसलपिनिया पुल्चरिमा), अशोका (साराका इंडिका), सिमुल (बॉम्बेक्स सीइबा) भी यहाँ खिलते हैं। पेड़ों की ये सभी प्रजातियाँ पोलाश के पेड़ों के प्रभुत्व वाले स्थानीय परिदृश्य को प्राकृतिक रूप से सुशोभित करने में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। यह दृश्य जीवन में एक बार मिलने वाला अवसर है, जब हम अपने शानदार रंग पटल में हमारी राजसी प्रकृति की प्रचुर सुंदरता का आनंद ले सकते हैं। इसलिए हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए अतुलनीय प्राकृतिक सौंदर्य के साथ ऐसे अद्वितीय पारिस्थितिक तंत्र का संरक्षण करना महत्वपूर्ण है।

आओ हाथों से हाथ मिलायें,

सभी मिलकर पानी बचाएँ।

जब न होगा पीने का नीर,

तब तक सब करेंगे विचार गंभीर।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह

डॉ सायकत कुमार बासु
पीएफएस, लेथब्रिज अल्बर्टा कनाडा
email: saikat.basu@alumni.uleth.ca

2023 के विज्ञान-दिवस कार्यक्रम का आयोजन साइंस एसोसिएशन ऑफ बंगाल (SAB), सोसाइटी फॉर सोशियो इकोनॉमिक एंड इकोलॉजिकल डेवलपमेंट (SEED) और कंप्यूटर सोसाइटी ऑफ इंडिया (CSI) द्वारा राम कृष्ण मिशन संस्थान के प्रतिष्ठित तुरीयानंद हॉल में किया गया है। संस्कृति, गोलपार्क, कोलकाता, पश्चिम बंगाल। मैं 28 फरवरी को विज्ञान दिवस कार्यक्रम में प्रमुख विज्ञान योगदानकर्ताओं को सम्मानित करने के लिए साइंस एसोसिएशन ऑफ बंगाल (SAB) का तहेदिल से आभार और धन्यवाद व्यक्त करता हूँ, जो कि तुरीयानंद हॉल, राम कृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान, गोलपार्क, कोलकाता में आयोजित किया जाता है। पुरस्कार पाने वालों में शामिल हैं: डॉ. शंकर कुमार नाथ (ऑन्कोलॉजिस्ट), डॉ. बरुण ए कुमार दत्ता (गणितज्ञ), श्री अकुल बिस्वास (सुंदरबन के पर्यावरण कार्यकर्ता), श्री प्रशांत कुमार बोस (पत्रकार और विज्ञान संचारक), डॉ. स्नेहाशिकता स्वर्णकार (कैंसर जीवविज्ञानी), डॉ. रघुनाथ भट्टाचार्य (थिन फिल्मों के प्लाज्मा प्रसंस्करण के विशेषज्ञ) और श्री सौरव चक्रवर्ती (सूचना प्रौद्योगिकी)।

महान भारतीय वैज्ञानिक, प्रोफेसर ए के बरुआ के जीवन और कार्य पर बहुप्रतीक्षित पुस्तक का भी कार्यक्रम में भाग लेने वाले गणमान्य व्यक्तियों द्वारा विमोचन किया गया।

डॉ. सुभब्रत रॉय चौधरी, सचिव, ने स्वागत भाषण दिया, उद्‌घाटन भाषण माननीय स्वामी सुपरनंदा जी महाराज (सचिव, राम कृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान) ने दिया और स्वागत गीत डॉ. शंकर कुमार नाथ ने गाया। कई उत्कृष्ट व्याख्यान दिए गए। प्रस्तुतकर्ताओं में डॉ. मधुमिता दुबे (पूर्व निदेशक और प्रोफेसर, अखिल भारतीय सार्वजनिक स्वास्थ्य और स्वच्छता संस्थान), डॉ. सोमनाथ भट्टाचार्य (कार्यकारी निदेशक, सीड), श्री देवप्रसन्ना सिन्हा (पूर्व अध्यक्ष और फेलो, सीएसआई), श्री अनुपम बोरल (प्रबंध निदेशक, गीतांजलि सोलर एंटरप्राइज), डॉ. शंकर नाथ (ऑन्कोगिस्ट), डॉ. स्नेहाशिकता स्वर्णकार (कैंसर जीवविज्ञानी), डॉ. पारिजात चक्रवर्ती (आईटी पेशेवर), डॉ. अनिरुद्ध नाग (अकादमिक और शोधकर्ता एयर इंडिया और सीएसआई), श्री प्रशांत कुमार बोस और श्री गोपी डे सरकार (पत्रकार), और डॉ. सैकत कुमार बसु (पर्यावरणविद) सम्मिलित हैं।

डॉ. सैकत कुमार बसु और डॉ. पारिजात चक्रवर्ती द्वारा समन्वयित कार्यक्रम में छात्रों हेतु एक उत्कृष्ट तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता भी शामिल थी। सुभाष रॉय चौधरी (एसएबी), श्री देवप्रसना सिन्हा (सीएसआई), डॉ. अनिरुद्ध नाग (एयर इंडिया), डॉ. पारिजात चक्रवर्ती (एसएबी), श्री बिमल सेनगुप्ता (एसएबी), श्री मृणाल भट्टाचार्य (सीड), डॉ. स्नेहा घोष, डॉ. सैकत कुमार बसु (SAB), सुश्री सुतापा बर्धन, सुश्री तिलोत्तोमा डे, सुश्री जयिता चाकी और सुश्री रूमा घोष कथोटिया (ECHO) द्वारा पुरस्कार वितरण किया गया।

संगोष्ठी के केंद्रीय फोकस के साथ नवाचार और रुचि के साथ विज्ञान सीखने के महत्व के साथ कार्यक्रम बहुत सफल रहा। भारत की राष्ट्रीय, आर्थिक और सामाजिक प्रगति में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के महत्व पर विभिन्न दृष्टिकोणों से चर्चा की गई। वैज्ञानिक और तकनीकी नवाचारों की भूमिका, पश्चिम बंगाल और भारत में विज्ञान आंदोलनों का इतिहास, समकालीन विज्ञान और भारतीय समाज, कैंसर अनुसंधान में हाल के रुझान, रोबोटिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी पर भी चर्चा की गई। अंधविश्वास, सामाजिक पूर्वाग्रहों के उन्मूलन के लिए एनजीओ कार्यकर्ताओं और विज्ञान संचारकों का महत्व और सामाजिक भेदभाव के साथ–साथ वैज्ञानिक शिक्षा और ग्रामीण और शहरी समुदायों की जागरूकता पर भी चर्चा की गई और उत्साह के साथ विचारों का आदान–प्रदान हुआ। दर्शकों, प्रतिभागियों और पुरस्कार विजेताओं को डॉ. सुभोब्रतो रॉय चौधरी और उनकी टीम द्वारा सम्मानित किया गया। मैं उन सभी को उनके जोश और उत्साह के साथ काम जारी रखने और हमारे समाज में विज्ञान और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के उनके प्रयासों हेतु बधाई देता हूँ।

चित्रः **सायकत कुमार बासु**

जैव विविधता संरक्षण की तत्काल आवश्यकता

डॉ सायकत कुमार बासु
पीएफएस, लेथब्रिज अल्बर्टा कनाडा
email: saikat.basu@alumni.uleth.ca

हम मनुष्यों ने अपने जीवन को आसान बनाने के लिए असंख्य अपरिवर्तनीय मानवजनित परिवर्तन लाकर अपने ग्रह को तबाह कर दिया है। दुर्भाग्य से हालांकि हमारी सामाजिक–आर्थिक और तकनीकी प्रगति ने हमारी प्रकृति और प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र पर केवल नकारात्मक प्रभाव डाला है।

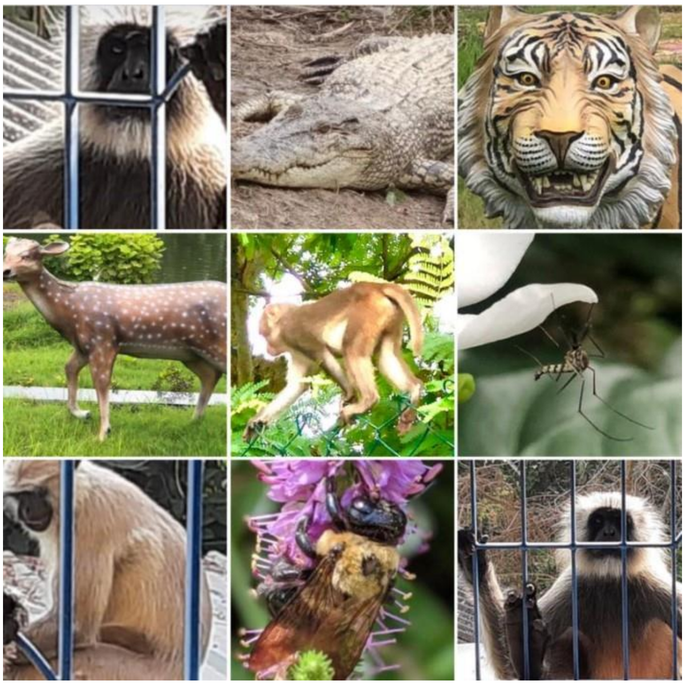

हमारे बढ़ते कृषि और उद्योग से प्रदूषण, जंगल की आग, प्रतिबंधित वन्यजीव क्षेत्रों और जंगलों में चराई, बड़े और छोटे वन उत्पादों का अत्यधिक दोहन, अवैध वन्यजीव व्यापार और तस्करी, अवैध शिकार, वन बेल्ट के अंदर अतिक्रमण, प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन, तेल, गैस, खनिज, जंगल, सतही और भूजल दोनों जलाशय, जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, समुद्र के स्तर में वृद्धि, ग्रीन हाउस गैसें, ग्रीन हाउस प्रभाव, ओजोन परतों की कमी, मिट्टी का क्षरण और मनुष्यों की अधिक आबादी के कुछ कारण हैं जो हमारी वैश्विक जैव विविधता के तेजी से क्षरण के लिए जिम्मेदार कारक हैं।

हमारी नदियों और महासागरों के साथ–साथ तटीय वन बेल्ट और मुहाने के पारिस्थितिक तंत्र का अत्यधिक दोहन उचित जाँच के बिना हमारी जलीय जैव विविधता के क्षरण का कारण बन रहा है। प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन प्रकृति को अस्थिर कर रहा है जिससे अचानक बाढ़, अकाल, सूखा, आत्मा के स्वास्थ्य की हानि के कारण मिट्टी का क्षरण हो रहा है जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य खराब हो रहा है और कृषि उत्पादन कम हो रहा है। मिट्टी माइक्रोफ्लोरा और जीव दोनों में समृद्ध है। लेकिन मिट्टी की गुणवत्ता का विनाश कई मिट्टी के बैक्टीरिया, कवक, माइकोप्लाज्मा इत्यादि कर रहे हैं। इस प्रकार अपने स्वयं के कार्यों और अज्ञानता के माध्यम से हम अपने विस्तारित ग्रह पर दीर्घकालिक भविष्य के प्रभाव को स्वीकार या समझे बिना जैव विविधता को नष्ट कर रहे हैं।

जैव विविधता संरक्षण स्वस्थ प्रजातियों की आबादी को बनाए रखने और प्राकृतिक पर्यावरण और पारिस्थितिकी तंत्र के संवर्धन को बहाल करने, संरक्षित करने और सुविधा प्रदान करने के लिए एक विशिष्ट

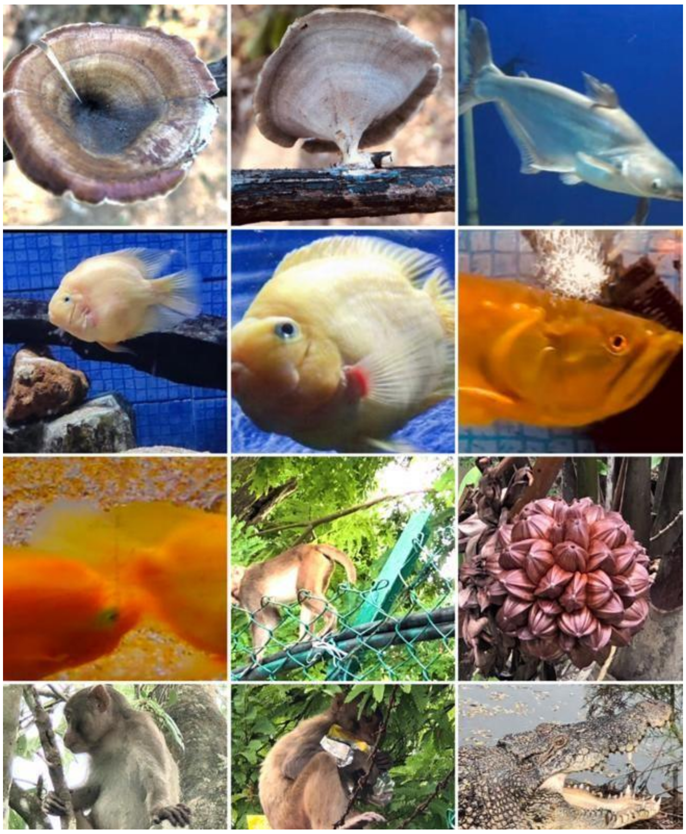

पारिस्थितिकी तंत्र या जैव–भौगोलिक क्षेत्र में हमारी प्रजातियों की कुल संख्या की रक्षा करने के अभ्यास को संदर्भित करता है। जैव विविधता के क्षरण के प्रमुख खतरों में आवास विखंडन और आवास विनाश, विखंडन, अतिदोहन, अवैध शिकार, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन शामिल हैं। IUCN के अनुसार वनस्पतियों और जीवों की लगभग 25–27000 वैश्विक प्रजातियों पर अब विलुप्त होने का बड़ा खतरा मंडरा रहा है। यह मीडिया और शैक्षणिक स्तरों दोनों में स्वीकार किया गया है कि हम अपने ग्रह में नई प्रजातियों की खोज, नामकरण और वर्णन करने की तुलना में तेजी प्रजातियों को खो रहे हैं। यह नोट करना चिंताजनक है कि हमारे स्थानीय, क्षेत्रीय और वैश्विक पारिस्थितिक तंत्रों की एक बड़ी संख्या लुप्तप्राय और स्थानिक प्रजातियाँ बहुत तेजी से गायब हो रही हैं।

वैश्विक जैव–विविधता क्षरण के वैचारिक पहलू को बेहतर ढंग से समझने के लिए हम कुछ उदाहरणों का पता लगा सकते हैं। मधुमक्खियों और अन्य प्राकृतिक (जैविक) परागणक दुनिया भर में कई मानवजनित कारकों के कारण महत्वपूर्ण गिरावट दिखा रहे हैं। मधुमक्खियां महत्वपूर्ण प्राकृतिक क्रॉस परागणकर्ता हैं और वैश्विक कृषि, वानिकी और मधुमक्खी पालन उद्योगों के अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं। कई व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण खाद्य और औद्योगिक फसलों के साथ–साथ वन प्रजातियों सहित फूलों की 85% से अधिक प्रजातियां प्रजनन के उद्देश्य से और पौधों की अगली पीढ़ी के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए मधुमक्खियों जैसे प्राकृतिक परागणकों पर सीधे निर्भर हैं।

हालांकि, जहरीले कीटनाशकों जैसे कृषि रसायनों के अत्यधिक उपयोग, मधुमक्खी पालन वाली वनस्पति की हानि, भूमि उपयोग के पैटर्न में बदलाव, मनुष्यों द्वारा अधिक खपत, जलवायु परिवर्तन, खराब प्रतिरक्षा और जैविक बीमारियों के साथ–साथ कॉलोनी पतन विकार (सीसीडी) दोनों के कारण विनाश हो रहा है। यह औद्योगिक कृषि मधुमक्खियों की प्रजातियों का सफाया कर उन्हें विलुप्त होने की ओर धकेल रही है। मधुमक्खियों और अन्य परागणकों की हानि का अर्थ मानव समाज का पूर्ण विनाश है।

सबसे बड़े स्तनपायी जीव हाथी, एक प्रवासी जानवर हैं और उन्हें अपने अस्तित्व के लिए चारागाह, आराम, प्रजनन और अन्य संसाधनों जैसे कि पानी और मिट्टी के स्थानों का पता लगाने के उद्देश्य से वनों के बीच स्थानांतरित करने की आवश्यकता है। दुर्भाग्य से, मानवजनित प्रभावों के कारण, अफ्रीका और एशिया में हाथियों के गलियारों को तेजी से नष्ट, बाधित, क्षतिग्रस्त और कृषि एवं उद्योग के विकास के लिए बदल दिया गया है। मानव अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु हाथियों के आवासों में अनियोजित वृद्धि और विकास के लिए जिम्मेदार है। जिसके कारण हाथियों का प्राकृतिक आवास पॉकेट आवासों में प्रतिबंधित होकर रह गया है, जो इस राजसी स्तनधारी प्रजातियों के अच्छे स्वास्थ्य और आनुवंशिकी दोनों के लिए हानिकारक है। हाथी अपने वार्षिक प्रवास के लिए राज्य और प्रांतीय सीमाओं और अक्सर अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं को पार करते हैं।

हाथियों की जरूरतों का सम्मान न करने से अवांछित मानव–हाथी संघर्ष बढ़ गया है जो दोनों प्रजातियों के लिए हानिकारक है, जिसके परिणामस्वरूप मृत्यु, विनाश और क्षति होती है। असहाय जानवरों को मानव बस्तियों में प्रवेश करने के लिए मजबूर किया जा रहा है क्योंकि उनके पारंपरिक प्रवासी मार्गों को अवरुद्ध, परिवर्तित और नष्ट किया जा रहा है और फिर उनके विनाशकारी व्यवहारों के लिए उन्हें दोषी ठहराया जाता है। ऐसी अवांछित व्यवहार से बचने के लिए, हमें वन्यजीव समन्वय और हाथियों के पारंपरिक प्रवास मार्गों का सम्मान करने की आवश्यकता है और हमारी विकास परियोजनाओं के भीतर उनकी जीवन शैली की आवश्यकताओं को गंभीरता से समायोजित करने की आवश्यकता है। अनियंत्रित और अनियोजित, कानूनी और अवैध आर्थिक विकास हमारे साझा भविष्य को नष्ट ही करेगा। हमें इस ग्रह के हमारे जंगली सहवासियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए विवेकपूर्ण ढंग से कार्य करने की आवश्यकता है।

अंत में हमें यह मानना ही पड़ेगा कि हम सभी के लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम अपने कार्यों के लिए स्वयं जिम्मेदार बनना सीखें। लंबे समय से हम दिखावा कर रहे हैं कि हम कुछ नहीं जानते हैं या हम यह नहीं समझते हैं कि हम विश्व स्तर पर अपनी जैव विविधता के क्षरण की दिशा में क्या कर रहे हैं। हमारी तत्काल वैश्विक पर्यावरणीय चुनौतियों के बारे में लोगों को संवेदनशील बनाने के लिए जनता के बीच हमारे प्राकृतिक पर्यावरण और पारिस्थितिक तंत्र के बारे में शिक्षा और जागरूकता उत्पन्न करना आवश्यक है।

हमें अपने हरित ग्रह की रक्षा के लिए उचित पर्यावरणीय कानूनों को कड़ाई से बनाने और क्रियान्वित करने के लिए मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति के साथ प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग पर जोर देने की आवश्यकता है। जहरीले कीटनाशकों और एग्रोकेमिकल्स के अत्यधिक उपयोग से हमारी प्रकृति नष्ट हो रही है। हमें अपने आर्थिक हितों को सुरक्षित रखते हुए प्रकृति को फलने–फूलने देने के लिए पर्याप्त रूप से जिम्मेदार होने की आवश्यकता है। यह महत्वपूर्ण है कि हम बेहतर उपयोग और पर्यावरण प्रदूषण को सीमित करने के लिए संयुक्त रूप से अपने प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन करें। जब तक हम एक साझा मंच पर दूसरों के साथ मिलकर काम करना नहीं सीखते, तब तक सूक्ष्म परिवर्तन कभी भी हमारी कमजोर वैश्विक जैव विविधता की रक्षा के लिए पर्याप्त नहीं होंगे। अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए जैव विविधता से भरपूर एक बेहतर दुनिया बनाने के लिए हम सभी को हाथ मिलाने की जरूरत है।

चित्रः सायकत कुमार बासु

‘पैराडाइस लॉस्ट’ के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण दर्शन-शास्त्र

नौरीन अहमद
पीजी, विद्यार्थी, अंग्रेज़ी विभाग, निवेदिता विश्वविद्यालय, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, भारत
डॉ सायकत कुमार बसु
पीएफ़एस, लेथ्ब्रिज, अल्बर्टा, कनाडा
ईमेल:saikat.basu@alumni.uleth.ca

''मैं जिस रास्ते से उड़ता हूं वह नर्क है, मैं खुद नर्क हूं'' इस टिप्पणी में शैतान के नर्क के विचार की तुलना और तुलना उसके नरक की उस धारणा से करें जब उसने कहा था ''मन अपनी जगह है और अपने आप में नर्क से स्वर्ग बना सकता है, स्वर्ग का नर्क" (पैराडाइज लॉस्ट, पुस्तक 1, पंक्तियाँ 254–255)।

पैराडाइज लॉस्ट, पुस्तक 1 में, हम शैतान के स्पष्ट वीरतापूर्ण आचरण को देखते हैं। उनमें मोहक अदम्य भावना का पता लगाया जा सकता है। शैतान के चरित्र को मिल्टन ने ऐसी आभा के साथ गढ़ा था जो वीरतापूर्ण प्रतीत होता था और उसे लगभग एक दुखद नायक बना देता है। मिल्टन ने जानबूझकर शैतान के चरित्र को इतनी उदार शक्ति के साथ तराशा है कि पैराडाइज लॉस्ट, बुक 4 में सबसे चमकीले तारे से एक भ्रामक सर्प के वक्र के पतन का पता लगाया जा सके।

पैराडाइज लॉस्ट, पुस्तक 1 में, 'हेल' एक भौतिक इकाई की तरह था। शैतान की उदार और अदम्य भावना ने नरक के सिंहासन पर शासन करने और नरक से स्वर्ग बनाने की पुष्टि की। उन्होंने बताया कि स्वर्ग में सेवा करने की तुलना में नर्क में शासन करना बेहतर है। ऐसा लगता था जैसे शैतान का उसकी सभी क्षमताओं और विशेष रूप से उसकी तर्कसंगत क्षमता पर बहुत अधिक नियंत्रण था। हालाँकि, पैराडाइज लॉस्ट, पुस्तक 4 में, नरक की भौतिक अवधारणा अधिक सूक्ष्म हो जाती है और यह इसके मनोवैज्ञानिक पहलू को सम्मिलित करने के लिए अपने क्षेत्र का विस्तार करती है।

शैतान की अदम्य शक्ति नष्ट होने लगती है और यह स्पष्ट हो जाता है कि यह नर्क है जो शैतान पर शासन कर रहा है। जैसे साँप अपने शिकार का गला घोंट देता है, वैसे ही नर्क शैतान का गला घोंट देता है। वह स्वयं पुष्टि करता है, ''मैं नर्क हूं'' नर्क उसमें और उसके भीतर रहता है। यह शैतान की सताई हुई और निगली हुई आत्मा पर प्रकाश डालता है, जो अपने भीतर ही सिमटती रहती है। वह एक अकेलेपन की स्थिति में है जहां वह फँसा हुआ और क्लौस्ट्रफोबिक महसूस करता है। अंतरात्मा की आवाज उसे पश्चाताप करने और अपने दयालु पिता से दया मांगने के लिए कहती है लेकिन उसके भीतर द्वेष और नफरत की गहराई उसे पश्चाताप करने और अनुग्रह माँगने से रोकती है। घायल अभिमान और शर्मिंदगी का भय उसे अपने भीतर ही समेट लेता है। हमें एक फँसी हुई आत्मा की छवि मिलती है जो मुक्ति के लिए रोती है लेकिन मुक्ति पाने के तरीकों में संशोधन करने और सुधारने में बहुत गर्व महसूस करती है। 'होने या न होने' के सवाल के बीच झूलता मन, इस तथ्य पर प्रकाश डालता है कि शैतान टूट रहा है। उसका मन और हृदय व्यथित और आहत है। वह हताशा की स्थिति में है, वह दोषी महसूस करता है और अपने भीतर पश्चाताप की तीव्र किरणें महसूस करता है। ''दिमाग अपनी जगह है और अपने आप नरक का स्वर्ग, स्वर्ग का नरक बना सकता है'' की भावना, पैराडाइज लॉस्ट, पुस्तक 4 में शैतान के पहले भाषण में छोटे टुकड़ों में टूटती हुई प्रतीत होती है। वह ईश्वर की उदारता, उसकी शक्ति, दया और प्रेम को स्वीकार करता है। वह परोपकारी के बिना शर्त प्यार के सामने अपनी अवज्ञा को भी स्वीकार करता है। शैतान की स्पष्ट शक्ति का आचरण कांच का एक मोटा, अपरिष्कृत टुकड़ा है जो जमीन को छूता है और टूट जाता है। वह अपनी स्वतंत्र इच्छा को तेज और दिशा देता है और एक परम विद्रोही बन जाता है जो अनिवार्य रूप से पुस्तक 1 में शैतान के तथाकथित शानदार स्केच पर प्रहार करता है। यह उसे एक ऐसी गली की ओर ले जाता है जो अंतहीन पीड़ाओं को जन्म देती है। यह एक डायस्टोपियन राज्य को जन्म देती है जो सबसे चमकीले तारे से भ्रामक सर्प में उसके पतन को दर्शाती है। यह अब वह सर्प है जिसने पहले उसका गला घोंट दिया था।

‘भारत’ के हमारे लिए क्या मायने है?

डॉ सायकत कुमार बासु
पीएफ़एस, लेथ्ब्रिज, अल्बर्टा, कनाडा
Email: saikat.basu@alumni.uleth.ca

हम भारत देश में रहते हैं। लेकिन क्या यह सिर्फ जमीन का एक टुकड़ा है जिसमें हम रहते हैं. एशिया महाद्वीप के दक्षिण में एक जैव–भौगोलिक क्षेत्र? क्या यह सिर्फ एक राष्ट्र है जिसमें हम सभी पैदा हुए हैं और बड़े हुए हैंए काम करते हैं और समय के साथ मर जाते हैं? क्या यह सिर्फ एक विशाल विविधतापूर्ण भूमि है जिसका अस्तित्व अनादि काल से है, जिसे हम सब हल्के में लेते हैं? अतीत में भारत का क्या मतलब था? हम अपने वर्तमान समय में भारत को कैसे परिभाषित करते हैं या हम निकट भविष्य में राष्ट्र को विकसित या विकसित होते कैसे देखते हैं?

अन्यथा, हम यह रहस्यमय प्रश्न भी पूछ सकते हैं कि भारत क्या है या भारत आपके लिए क्या मायने रखता है?

जिस देश में हम रहते हैं या जहाँ हमारा जन्म हुआ है, उसके प्रति हम सभी की भावनाएं, दृष्टिकोण, मिश्रित भावनाएं और प्रेम संभवतः अलग–अलग हो सकते हैं। लेकिन वास्तव में हमारे लिए भारत का सही अर्थ तलाशना जरूरी है। भारत ऐतिहासिक रूप से एक विशाल राष्ट्र है जो ऐतिहासिक रूप से अफगानिस्तान की सीमाओं से लेकर आधुनिक म्यांमार तक फैला है और हिंद महासागर के पार दक्षिण में श्रीलंका और अन्य द्वीप देशों तक फैला हुआ है। 15 अगस्त, 1947 को ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से आज़ादी के बाद भारत की वर्तमान राजनैतिक अंतर्राष्ट्रीय सीमाएँ देश के विभिन्न हिस्सों में क्रूर लड़ाइयों और विवादों के कारण अभी भी अस्थिर हैं।

ब्रिटिश भारत के भारत और पाकिस्तान में विभाजन की कठिन सामाजिक–आर्थिक और भू–राजनैतिक वास्तविकताएँ, जिसके कारण अकल्पनीय मानवीय दुःख, हिंसक दंगे, सांप्रदायिक हिंसा, सामूहिक बलात्कार, लूटपाट, शस्त्रागार और निर्दोष लोगों की जान चली गई, भारत और पाकिस्तान के जन्म का प्रतीक है।

भारत, कश्मीर (उत्तर) से कन्याकुमारी (दक्षिण) तक लंबाई में फैला हुआ है और कच्छ के रन (पश्चिम) से लेकर कोहिमा (पूर्व) तक चौड़ाई में, अपनी अनूठी जातीय विविधता, समृद्ध विरासत और गौरवशाली इतिहास से समृद्ध है। 22 से अधिक भाषाओं और 540 से अधिक बोलियों, असंख्य आदिवासी समुदायों, वनवासियों, हलचल भरे शहरों और कस्बों, गांवों और बस्तियों से युक्त भूमिए और जातीय, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक मापदंडों में अकल्पनीय रूप से विविध है। यह एकमात्र ऐसा देश है जो चार विश्व धर्मों, अर्थात् हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिख धर्म का जन्मस्थान रहा है। इस्लाम, ईसाई धर्म और यहूदी धर्म जैसे अन्य सभी प्रमुख धार्मिक समूहों का भी वर्तमान भारतीय आबादी में विभिन्न अनुपात में प्रतिनिधित्व है। एक ऐसा देश जो 2030 तक चीन को पछाड़कर सबसे बड़ी मानव आबादी वाला देश बनने के लिए तैयार है, इस ग्रह पर सातवां सबसे बड़ा देश है।

भारतीय उपमहाद्वीप में विभिन्न जातियों और राष्ट्रों के मिश्रण के साथ भारत एक शानदार और गौरवशाली अतीत से गुजरा है। इनमें असंख्य भारतीय आदिवासी और उनके कुल, शक, हूण, कुषाण, गुर्जर, मौर्य, गुप्त, पाल, सेना, अहोम, नागा, कुकिद, त्रिपुरी, लेप्चा, गोरखा, मंगोल, यूनानी, मध्य एशियाई, ईरानी, अफगान, तुर्क शामिल हैं। तिब्बती, चीनी, बर्मी, सैयद, इब्राहिम, लोधी, मुगल, पठान, लंकाई, इंडो-चाइनीज़, नेपाली, भूटानी, सिक्किमी, केवल मुट्ठी भर का उल्लेख करने के लिए भारत महान जातीय मिश्रण की भूमि है, जिसके उत्तर में ऊँचे हिमालय, पश्चिम में रेगिस्तानी और नमकीन दलदली भूमि से लेकर दक्षिण में महान डेक्कन प्रायद्वीप और भारतीय उत्तर–पूर्व में सात राज्य शामिल हैं, जो जैविक, भौगोलिक और जातीय रूप से दक्षिण पूर्व एशिया के साथ निरंतर है। .

इस प्रकार, उभरता हुआ भारत मध्य पूर्व और मध्य एशिया को दक्षिण पूर्व एशिया से जोड़ने वाला एक विशाल बाजार और गलियारा है, एक ऐसा क्षेत्र जिसमें स्थानिक आर्थिक और भू–राजनीतिक अवसर हैं।

विशाल जनसंख्या के दबाव, स्थिर अर्थव्यवस्था, पर्याप्त बुनियादी ढांचे के विकास की कमी, अर्थव्यवस्था की धीमी वृद्धि, उच्च स्तर का भ्रष्टाचार, भाई–भतीजावाद, राजनीतिक दिवालियापन और खराब नेतृत्व वाले विश्वसनीय राजनेता और दूरदर्शी की कमी के बावजूद, भारत सफलतापूर्वक उभरा है। एक वैश्विक बिजलीघर. भारत सस्ते कृषि उत्पादों, फार्मास्यूटिकल्स, लोहा और (एसटीई)एल, कोयला, विभिन्न खनिजों, लकड़ी के उत्पादों, परिधान और कपड़ा, प्लास्टिक, कई रासायनिक उद्योगों और अन्य औद्योगिक उत्पादों और उपकरणों के लिए एक प्रमुख वैश्विक बाजार है। राष्ट्र के समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों ने कुशल और गैर–कुशल श्रमिकों के समर्थन और कड़ी मेहनत के साथ–साथ स्वतंत्रता के बाद देश की आर्थिक वृद्धि को बनाए रखा और बढ़ावा दिया है। भारत अपनी विशाल जनसंख्या, शैक्षिक और तकनीकी कौशल, उन्नत प्रशिक्षण के साथ–साथ उनकी सेवा के लिए सस्ती कीमत के कारण पूरे ग्रह पर सबसे बड़े कार्यबल आपूर्तिकर्ताओं में से एक है।

भारत के पास वर्तमान में चौथी सबसे बड़ी सेना है और यह एक परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र है। भारत पिछले चार से पांच दशकों में अपनी आर्थिक विकास और उदारीकरण नीतियों के माध्यम से छठी सबसे बड़ी वैश्विक अर्थव्यवस्था की स्थिति तक पहुंच गया है। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों तरह के विदेशी निवेश को आकर्षित करके राष्ट्र ने भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, सांख्यिकी, कृषि, फार्मेसी, जैव प्रौद्योगिकी, चिकित्सा विज्ञान, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, कंप्यूटर विज्ञान, विद्युत, इलेक्ट्रॉनिक्स, पर विशेष जोर देने के साथ आधुनिक शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी और इंजीनियरिंग के विशाल क्षेत्रों में, समुद्री और विद्युत इंजीनियरिंग, सूचना प्रौद्योगिकी, पत्रकारिता और जनसंचारय साथ ही मानविकी और समाजशास्त्र से संबंधित विभिन्न विषयों में महत्वपूर्ण प्रगति की है।

सिंधु घाटी सभ्यता के दिनों से ही भारतीय कला और वास्तुकला का गौरवशाली इतिहास रहा है। अजंता, एलोरा, खजुराहो, एकेगंता, सांची, पुरी, आगरा, लखनऊ, मैसूर, चेन्नई, बंगाल, राजपुताना और उत्तर से दक्षिण तक भारत के अन्य हिस्सों के ऐतिहासिक स्थलों में चित्रित स्मारकीय कला कृतियाँ किसी भी कला के लिए एक विस्मयकारी प्रेरणादायक अनुभव है। आलोचक और कला प्रेमी. देश कला, डिजाइन में कलात्मक श्रेष्ठता, शिल्प कौशल के साथ–साथ सरलता के बेहतरीन उदाहरण प्रदान करता है। गणेश पेन, विकास भट्टाचार्य, नंदलाल बोस, रवीद्रनाथ टैगोर, रामकिंकर बैज, एम.एफ. हुसैन, वसीम कपूर जैसे महान नाम केवल कुछ मुट्ठी भर नामों का उल्लेख करते हैं। भारत के महान सांस्कृतिक प्रतीक राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, चितन्यादेव, श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, महात्मा गांधी, चितरंजन दास, रवींद्रनाथ टैगोर, सत्यजीत रे, मृणाल सेन, ऋत्विक घटक, मुंसी प्रेमचंद, पी. सी. रॉय, सी. वी. रमन, जे. सी. बोस, सत्येन बोस, मेघनाद साहा, होमी जहांगीर भाबा, जे. आर. डी. टाटा, अभिजीत बिनायक सेन, अमर्त्य सेन, मदर टेरेसा, भीमसेन जोशी, बिरजू महाराज, केलुचरण महापात्रा, लता मंगेशकर, भूपेन हजारिका और अन्य लोगों ने हमें गौरवान्वित किया है। लेकिन साथ ही क्रिकेट, हॉकी, बैडमिंटन और कबड्डी के अलावा, आधुनिक खेलों के विभिन्न विषयों में खुद को साबित करने में भारत की अभूतपूर्व विफलता एक बड़ा दर्द है जिसे हर भारतीय हमेशा महसूस करता है।

भारत, एक विशाल जैव विविधता वाला देश, है सर्फ पहाड़ों, तटीय और मुहाना क्षेत्रों, द्वीपों, रेगिस्तानों, प्रायद्वीपों, गर्म और ठंडे रेगिस्तानों, खुले घास के मैदानों, मैंग्रोव, पर्णपाती और शंकुधारी जंगलों, समृद्ध विविधता वन्य जीवन, वन और जैव विविधतायें बल्कि एक ऐसा राष्ट्र जो अपनी तमाम विविधताओं और मतभेदों के बावजूद एकजुट है।

भारतीय लोकतंत्र ने **अनेक** उतार–चढ़ाव के साथ लंबी खतरनाक यात्रा पार कर ली है और इस नई सहस्राब्दी में उसने पूरे ग्रह पर अपनी वैश्विक उपस्थिति दर्ज कराई है। सचमुच, यदि प्रबंधन तंत्र और प्रतिष्ठा प्रक्रियाओं को बेहतर ढंग से प्रबंधित किया गया होता तो भारत महान ऊंचाइयों तक पहुंच सकता था लेकिन, फिर भी...देश ने भूराजनीतिक, सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक, सैन्य और व्यावसायिक रूप से वैश्विक मंच पर अपनी छाप छोड़ी है। प्राचीन सभ्यता स्वतंत्र विदेशी और आर्थिक नीतियों और सतर्क वैश्विक उपस्थिति के साथ एक आधुनिक संप्रभु राष्ट्र के रूप में सामने आई है। भारत सिर्फ अरबों से अधिक आबादी वाली एक प्राचीन सभ्यता नहीं है, लेकिन यह उसकी तीसरी दुनिया की स्थिति से बढ़कर आक्रामक रूप से विकासशील देश और एक उभरती वैश्विक महाशक्ति बन गई है।

महत्वपूर्ण दिन और घटनाएँ

वी. सुनीता भूविज्ञान विभाग
योगी वेमना विश्वविद्यालय, कडप्पा, आंध्र प्रदेश
ई-मेल: Vangalasunitha@gmail.com

3 जनवरी: अंतर्राष्ट्रीय माइंड–बॉडी वेलनेस दिवस

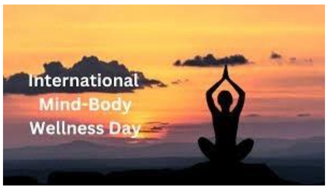

अंतर्राष्ट्रीय माइंड–बॉडी वेलनेस दिवस 3 जनवरी को मनाया जाता है और यह नए विकास और कल्याण तरीकों को व्यवहार में लाकर हमारे शरीर और दिमाग दोनों की सराहना करने का एक अवसर है।

4 जनवरी: विश्व ब्रेल दिवस

ब्रेल लिपि का आविष्कार करने वाले लुई ब्रेल के सम्मान में 4 जनवरी को विश्व ब्रेल दिवस मनाया जाता है। यह दिन हर किसी के लिए मानवाधिकारों तक पहुंच की आवश्यकता को भी स्वीकार करता है, जिसमें अंधे या दृष्टिबाधित लोग भी शामिल हैं।

5 जनवरी: राष्ट्रीय पक्षी दिवस

पर्यावरण के लिए छोटे पक्षियों के महत्व के बारे में लोगों की समझ बढ़ाने के लिए 5 जनवरी को राष्ट्रीय पक्षी दिवस मनाया जाता है। यह कार्यक्रम एवियन वेल्फा आर ई सी ओ ए एल आई टी ओ एन द्वारा समर्थित है।

वह संगठन जो उन पक्षियों के बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने के लिए कड़ी मेहनत करता है जिनका अपहरण कर लिया जाता है या उन्हें मौद्रिक लाभ या मानव आनंद के लिए कैद में रखा जाता है।

6 जनवरी: विश्व युद्ध अनाथ दिवस

युद्ध अनाथों की पीड़ा के बारे में जागरूकता बढ़ाने और उन्हें होने वाले आघात से निपटने के लिए हर साल 6 जनवरी को विश्व युद्ध अनाथ दिवस मनाया जाता है।

8 जनवरी: पृथ्वी घूर्णन दिवस

पृथ्वी घूर्णन दिवस प्रतिवर्ष 8 जनवरी को मनाया जाता है। फ्रांसीसी भौतिक विज्ञानी लियोन फौकॉल्ट का 1851 का प्रदर्शन कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है, आज मनाया जाता है।.

9 जनवरी: प्रवासी भारतीय दिवस

भारत महात्मा गांधी की दक्षिण अफ्रीका से भारत वापसी की स्मृति में हर साल 9 जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस मनाता है। यह दिन देश के विकास में अनिवासी भारतीय समुदाय के महान योगदान की सराहना और सम्मान करता है।

10 जनवरी: विश्व हिंदी दिवस

वार्षिक विश्व हिंदी दिवस 10 जनवरी को मनाया जाता है। उस तारीख को मनाने के लिए जब 1949 में न्छळ। में पहली बार हिंदी का उपयोग किया गया था, विश्व हिंदी दिवस की स्थापना की गई थी। हिंदी तीसरे नंबर पर है 600 मिलियन से अधिक देशी वक्ताओं के साथ, मंदारिन चीनी और अंग्रेजी के बाद, यह दुनिया में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है।

10 जनवरी: लाल बहादुर शास्त्री की पुण्य तिथि

उन्होंने स्वतंत्रता के बाद भारत के दूसरे प्रधान मंत्री के रूप में कार्य किया। उन्होंने ''जय जवान जय किसान'' वाक्यांश को प्रसिद्ध बनाया। उन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया। 11 जनवरी, 1966 को दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया। उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ''शांति पुरुष'' के रूप में भी जाना जाता था।

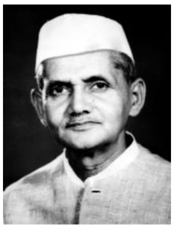

11 जनवरी: राष्ट्रीय मानव तस्करी जागरूकता दिवस

मानव तस्करी की चल रही समस्या के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए इसे 11 जनवरी को मनाया जाता है। इस दिन का उद्देश्य है
मानव तस्करी के पीड़ितों के अधिकारों को बढ़ावा देना और उनकी रक्षा करना, साथ ही उनकी स्थिति के बारे में जागरूकता बढ़ाना।

12 जनवरी: राष्ट्रीय युवा दिवस

हर साल 12 जनवरी को स्वामी विवेकानन्द जयंती मनाई जाती है, जिसे आमतौर पर उनकी जयंती के रूप में जाना जाता है। उनका जन्म 12 जनवरी, 1863 को हुआ था।

14 जनवरी: लोहड़ी

फसल का मौसम आधिकारिक तौर पर लोहड़ी से शुरू होता है, जो 2023 का पहला त्योहार है। उत्तरी भारत में, विशेष रूप से पंजाब और हरियाणा राज्यों में, यह उत्साह के साथ मनाया जाता है। 13 या 14 जनवरी, 2023 को उनकी स्मृति में अलाव जलाया जाएगा लोहड़ी का त्यौहार, और लोग दोस्तों और परिवार के साथ इसके चारों ओर नृत्य करेंगे। कैम्प फायर में उपस्थित लोग मक्का, चावल, रेवड़ी, गुड़ और गेहूं चढ़ाते हैं।

15 जनवरी: मकर संक्रांति

यह इस वर्ष 14 जनवरी को मनाया जाएगा और सर्दियों के मौसम के अंत और नई फसल के मौसम की शुरुआत का प्रतीक है।

15 जनवरी: पोंगल

पोंगल, भारत की सबसे प्रसिद्ध छुट्टियों में से एक है, जिसे पूरी दुनिया में तमिल आबादी द्वारा व्यापक रूप से मनाया जाता है। तमिल सौर कैलेंडर में पोंगल का उत्सव ताई महीने में मनाया जाता है।

23 जनवरी: नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयंती

23 जनवरी, 1897 को नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म कटक, उड़ीसा में हुआ था। वह सबसे प्रसिद्ध भारतीय स्वतंत्रता योद्धाओं में से एक थे। आजाद हिंद फौज या इंडियन नेशनल आर्मी (प्छ।) उनके सैनिकों के नाम थे।

द्वितीय विश्व युद्ध में, उन्होंने सेनाओं से लड़ने वाली एक विदेशी भारतीय राष्ट्रीय सेना के कमांडर के रूप में भी कार्य किया।

24 जनवरी: राष्ट्रीय बालिका दिवस

हर साल 24 जनवरी को राष्ट्रीय चित्रांकन के लिए बालिका दिवस मनाया जाता है कि भारत में अधिकांश लड़कियाँ अनुभव करती हैं, शिक्षा, पोषण, कानूनी अधिकार का मूल्य, चिकित्सा देखभाल, और बालिकाओं के अन्य बातों के अलावा सुरक्षा पर ध्यान दें।

24 जनवरी: अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा दिवस

हर साल 24 जनवरी को सभी के लिए समावेशी, न्यायसंगत और उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा के लिए क्रांतिकारी पहल को प्रोत्साहित करने के लिए मनाया जाता है।

25 जनवरी: राष्ट्रीय मतदाता दिवस

युवाओं को राजनीति में भाग लेने के लिए प्रेरित करने के लिए प्रतिवर्ष 25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया जाता है। यह दिन सबसे पहले 2011 में चुनाव आयोग की स्थापना के उपलक्ष्य में मनाया गया था।

25 जनवरी: राष्ट्रीय पर्यटन दिवस

भारत पर्यटन के महत्व और देश की अर्थव्यवस्था में इसके योगदान के बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रत्येक वर्ष 25 जनवरी को राष्ट्रीय पर्यटन दिवस मनाता है।

26 जनवरी: गणतंत्र दिवस

1935 के भारत सरकार अधिनियम को 26 नवंबर, 1949 को भारतीय संविधान सभा द्वारा निरस्त कर दिया गया और संविधान देश का अंतिम कानून बन गया। 26 जनवरी, 1950 को सरकार का लोकतांत्रिक स्वरूप लागू किया गया। राजपथ पर हुई सबसे भव्य परेड
दिल्ली में वार्षिकोत्सव इसी दिन होता था।

28 जनवरी: लाला लाजपत राय की जयंती

28 जनवरी, 1865 को लाला लाजपत राय का जन्म पंजाब में हुआ था। वह एक प्रसिद्ध राष्ट्रवादी व्यक्ति थे जो भारत में स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति आलोचनात्मक थे। उन्हें ''पंजाब केसरी'' उपनाम भी मिला, जिसका अर्थ है ''पंजाब **का** शेर''।

उन्होंने पंजाब नेशनल बैंक की स्थापना का निरीक्षण किया,"

30 जनवरी: शहीद दिवस

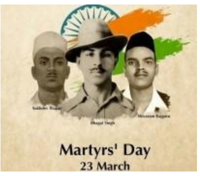

हर साल 30 जनवरी को महात्मा गांधी और तीन भारतीय क्रांतिकारियों द्वारा खोए गए जीवन के सम्मान में शहीद दिवस या शहीद दिवस मनाया जाता है। 30 जनवरी, 1948 को ''राष्ट्रपिता'' की हत्या कर दी गई।

30 जनवरी: विश्व कुष्ठ दिवस जनवरी के अंतिम रविवार को, विश्व कुष्ठ दिवस स्वास्थ्य संबंधी विकारों के साथ कोई संतान न होने के लक्ष्य की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए चिह्नित किया गया है। जैसा कि सामान्य ज्ञान है, विकलांगताएँ समय के साथ किसी पुरानी बीमारी के परिणामस्वरूप विकसित होता है जिसका गलत निदान किया गया है।

2 फ़रवरी : विश्व आर्द्रभूमि दिवस

हर साल 2 फरवरी को विश्वव्यापी दिवस को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाता है। यह दिन 2 फरवरी 1971 को रामसर, ईरान में आर्द्रभूमि पर कन्वेंशन को अपनाने की तारीख को चिह्नित करता है। यह पहली बार 1997 में मनाया गया था। विश्व वेटलैंड्स दिवस 2020 का विषय 'वेटलैंड्स और जैव विविधता' है।

2 फ़रवरी: आरए जागरूकता दिवस

आरए जागरूकता दिवस रुमेटीइड गठिया जागरूकता दिवस है और रुमेटीइड गठिया से पीड़ित रोगियों के लिए जागरूकता फैलाने के लिए 2 फरवरी को मनाया जाता है।

4 फ़रवरी: विश्व कैंसर दिवस

हर साल 4 फरवरी को विश्व कैंसर दिवस विश्व स्तर पर मनाया जाता है और˘भ् द्वारा लोगों को कैंसर बीमारी के बारे में जागरूक करने और इसे ठीक करने के तरीके के बारे में जागरूक करने के लिए मनाया जाता है। 2020 की थीम 'आई एम एंड आई विल' है। डब्ल्यूएचओ के अनुसार, विषय व्यक्तिगत कार्रवाई के लिए आग्रह करने वाला एक सशक्त आह्वान है प्रतिबद्धता और भविष्य को प्रभावित करने के लिए अभी की गई व्यक्तिगत कार्रवाई की शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

8 फ़रवरी: सुरक्षित इंटरनेट दिवस

यह इस वर्ष 8 फरवरी को मनाया जाता है। दिन का लक्ष्य सभी इच्छुक लोगों को एक साथ लाना है।

इंटरनेट को बच्चों और युवाओं के लिए बेहतर और सुरक्षित स्थान बनाने के लिए पार्टियां मिलकर काम कर रही हैं,

10 फ़रवरी: राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस

यह 10 फरवरी को मनाया जाता है। भारत सरकार का स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय यह सुनिश्चित करने के लिए काम कर रहा है कि देश में किसी भी बच्चे को कीड़े न हों।

10 February: विश्व दलहन दिवस

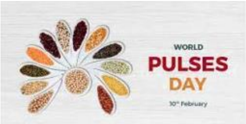

टिकाऊ खाद्य उत्पादन के एक घटक के रूप में दालों के पोषण और पर्यावरणीय लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए 10 फरवरी को मनाया जाता है।

11 फ़रवरी: विज्ञान में महिलाओं और लड़कियों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस 11 फरवरी को यह माना गया कि विज्ञान में महिलाओं और लड़कियों की न केवल उपभोक्ता के रूप में बल्कि नवप्रवर्तक के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका है। दिन का लक्ष्य सक्षम बनाना है

12 फ़रवरी: डार्विन दिवस

विकासवादी जीव विज्ञान के संस्थापक चार्ल्स डार्विन का जन्म 12 फरवरी, 1806 को हुआ था और हर साल इस तारीख को डार्विन दिवस के रूप में मान्यता दी जाती है। यह दिन विकास और पौधों के अध्ययन में डार्विन के योगदान का सम्मान करता है।

12 फ़रवरी: राष्ट्रीय उत्पादकता दिवस

यह भारत की उत्पादन संस्कृति में सुधार लाने के प्रयास में हर साल 12 फरवरी को मनाया जाता है। द एन ए टी आई ओ एन एल प्रोडक्टिविटी काउंसिल (एनपीसी) इसे एक थीम के साथ मनाती है।

12 फ़रवरी - विश्व रेडियो दिवस

यह हर साल फरवरी को मनाया जाता है भारत की उत्पादन संस्कृति को बेहतर बनाने के प्रयास में राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद (एनपीसी) इसे एक थीम के साथ मनाती है।

13 फ़रवरी: सरोजिनी नायडू जयंती

भारतीय कोकिला सरोजिनी नायडू का जन्म 13 फरवरी को हुआ था और इस दिन को उनके जन्मदिन के रूप में मान्यता प्राप्त है।,

उनके माता–पिता, विद्वान और दार्शनिक अघोरनाथ चट्टोपाध्याय और बरदा सुंदरी देवी ने 13 फरवरी, 1879 को हैदराबाद में उनका दुनिया में स्वागत किया।

14 फ़रवरी: अंतर्राष्ट्रीय मिर्गी दिवस

अंतर्राष्ट्रीय मिर्गी दिवस हमेशा फरवरी के दूसरे सोमवार को मनाया जाता हैय इस वर्ष, यह वैलेंटाइन डे से एक दिन पहले 14 फरवरी को पड़ता है।

20 फ़रवरी: विश्व सामाजिक न्याय दिवस

सामाजिक न्याय गरीबी के खिलाफ लड़ाई को कैसे प्रभावित करता है, इसके बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए हर साल 20 फरवरी को दुनिया भर के लोग विश्व सामाजिक न्याय दिवस मनाते हैं।

21 फ़रवरी: अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

हर साल 21 फरवरी को दुनिया भर के लोग भाषाओं की विविधता के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाते हैं।

22 फ़रवरी: विश्व सोच दिवस

हर साल 22 फरवरी को, 150 विभिन्न देशों में गर्ल स्काउट्स और गर्ल गाइड विश्व सोच दिवस मनाते हैं, जिसे कभी–कभी सोच दिवस भी कहा जाता है।

27 फ़रवरी: विश्व एनजीओ दिवस

इस दिन का उद्देश्य सभी गैर–लाभकारी और गैर–सरकारी संगठनों के साथ–साथ उन व्यक्तियों को पहचानना, जश्न मनाना और सम्मान देना है जो उनके लिए काम करते हैं और समाज में योगदान देते हैं।

28 फ़रवरी: राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

हर साल 28 फरवरी को, भारत उस दिन की याद में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाता है जब भारतीय वैज्ञानिक सर चंद्रशेखर वेंकट रमन ने रामन प्रभाव की खोज की थी। 28 फरवरी, 1928 को वह रमन प्रभाव विकसित किया, जिसके लिए उन्हें 1930 में भौतिकी में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

28 फ़रवरी: दुर्लभ रोग दिवस

यह दिन उन लोगों के लिए बदलाव को बढ़ावा देता है जिनके पास है एक दुर्लभ बीमारी, उनके परिवार और करियर स्थिति के बारे में जागरूकता बढ़ाकर।

1 मार्च – शून्य भेदभाव दिवस

हर साल 1 मार्च को दुनिया भर में शून्य भेदभाव दिवस मनाया जाता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उम्र, लिंग, जातीयता, त्वचा का रंग, ऊंचाई या वजन की परवाह किए बिना हर किसी के साथ सम्मान के साथ व्यवहार किया जाए। तितली शून्य भेदभाव दिवस का प्रतीक है। शुरुआत के लिए, संयुक्त राष्ट्र ने 1 मार्च 2014 को यह दिन मनाया।

1 मार्च: विश्व नागरिक सुरक्षा दिवस

हर साल 1 मार्च को, विश्व नागरिक सुरक्षा दिवस नागरिक सुरक्षा के महत्व के बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने और सभी के प्रयासों, बलिदानों और उपलब्धियों का सम्मान करने के लिए मनाया जाता है।

आपदा राहत में शामिल सेवाएँ। 1990 में, अंतर्राष्ट्रीय नागरिक सुरक्षा संगठन ने इस दिन को मनाने का निर्णय लिया।

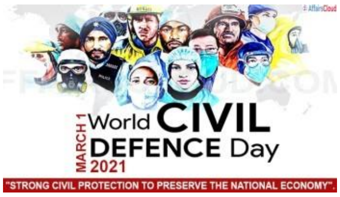

1 मार्च - स्व-चोट जागरूकता दिवस

यह पूरी दुनिया में 1 मार्च को मनाया जाता है। इसका लक्ष्य आत्म–चोट से जुड़े कलंक को खत्म करना और माता–पिता, परिवार के सदस्यों, शिक्षकों और आत्म–नुकसान के संकेतकों को पहचान से आग्रह करना है।

3 मार्च - विश्व महासागर दिवस

3 मार्च को दुनिया विश्व महासागर दिवस मनाती है, जो कि है सतत विकास लक्ष्य 12: पानी के बिना जीवन, जो किस पर केंद्रित है?

समुद्री प्रजातियाँ और उन चिंताओं और महत्वपूर्ण मुद्दों पर प्रकाश डालता है जो समुद्री जैव विविधता हमारे दैनिक जीवन में उत्पन्न करती हैं।

3मार्च - विश्व श्रवण दिवस

दुनिया भर में बहरेपन को रोकने और सुनने की क्षमता को बढ़ावा देने के तरीकों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए हर साल 3 मार्च को विश्व श्रवण दिवस मनाया जाता है।

4 मार्च - राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद 4 मार्च को राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस मनाती है। यह दिन लोगों को विभिन्न प्रकार की परेशानियों जैसे वित्तीय हानि, स्वास्थ्य समस्याओं और उनके दैनिक जीवन में आने वाली अन्य समस्याओं से बचाने के लिए मनाया जाता है।

4 मार्च - रामकृष्ण जयंती

रामकृष्ण का जन्म हिंदू चंद्र कैलेंडर के अनुसार फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष की द्वितीया को हुआ था। हर साल उनके जन्मदिन पर सभी रामकृष्ण मठ उसके जन्म का स्मरण करो. यह इस वर्ष 4 मार्च को मनाया जाएगा। उनका दावा है, ''मानव जन्म का संपूर्ण उद्देश्य ईश्वर को स्वीकार करना है।''

8 मार्च - अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

हर साल 8 मार्च को महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रगति दुनिया जश्न मनाती है। यह लैंगिक समानता हासिल करने की दिशा में भी एक कदम है। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2023 की थीम '' प्रौद्योगिकी'' है।

9 मार्च: धूम्रपान निषेध दिवस

तंबाकू के डिजिट ऑलः लैंगिक समानता के लिए नवाचार और उपयोग के प्रतिकूल स्वास्थ्य प्रभावों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और दुनिया भर में लोगों को धूम्रपान छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए हर साल मार्च के दूसरे बुधवार को धूम्रपान निषेध दिवस मनाया जाता है। यह इस वर्ष 9 मार्च को पड़ता है।

14 मार्च: पाई दिवस

14 मार्च को पूरी दुनिया में पाई दिवस मनाया जाता है। पाई एक गणितीय स्थिरांक है जिसे एक प्रतीक द्वारा दर्शाया जाता है।

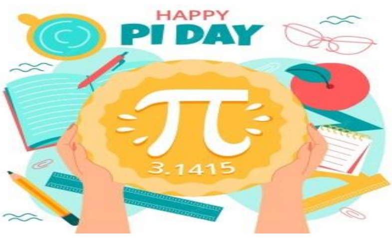

14 मार्च: अंतर्राष्ट्रीय नदी दिवस

नदी संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ाने और बेहतर नदी नीतियों की मांग करने के लिए हर साल 14 मार्च को नदियों के लिए अंतर्राष्ट्रीय कार्रवाई दिवस मनाया जाता है। हमारी नदियों के खतरों के बारे में जागरूकता बढ़ाए और मिलकर समाधान निकालें यह एक दिन है।

14 मार्च: विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस

उपभोक्ता अधिकारों और चिंताओं के बारे में वैश्विक जागरूकता बढ़ाने के लिए इसे हर साल 15 मार्च को मनाया जाता है। यह दिन यह मांग करने का मौका है कि सभी उपभोक्ता अधिकारों को स्वीकार किया जाए और उनकी रक्षा की जाए, साथ ही सामाजिक अन्याय का विरोध किया जाए।

14 मार्च: राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस

हर साल 16 मार्च को भारत राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस मनाता है, जिसे राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस (प्डक) के रूप में भी जाना जाता है। जब मार्च 1995 को ओरल पोलियो वैक्सीन की पहली खुराक दी गई, तो पहली बार इस पर ध्यान दिया गया। यह पृथ्वी से पोलियो उन्मूलन की आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ाने का एक प्रयास है।

20 मार्च: विश्व गौरैया दिवस

गौरैया संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए 20 मार्च को दुनिया विश्व गौरैया दिवस मनाती है। यह दिन मानव–गौरैया के बंधन का भी सम्मान करता है, लोगों को प्यार करने के लिए प्रोत्साहित करता है
गौरैया और हमारे जीवन में उनके मूल्य को पहचानें।

20 मार्च: विश्व मौखिक स्वास्थ्य दिवस

मौखिक स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए 20 मार्च को विश्व मौखिक स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है। विश्व मौखिक स्वास्थ्य दिवस 2023 का विषय ''अपने मुँह पर गर्व करें'' है। दूसरे शब्दों में कहें तो, आपको इसे संजोना चाहिए और इसकी देखभाल करनी चाहिए।

21 मार्च - अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस

पृथ्वी के जीवन चक्र को संतुलित करने में वनों के महत्व, मूल्य और योगदान के बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने के लिए हर साल 21 मार्च को विश्व वानिकी दिवस या अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस मनाया जाता है। विश्व वानिकी दिवस 1971 में यूरोपीय कृषि परिसंघ की 23वीं महासभा के दौरान बनाया गया था।

21 मार्च: विश्व डाउन सिंड्रोम

हर साल 21 मार्च को विश्व डाउन सिंड्रोम दिवस मनाया जाता है। डाउन सिंड्रोम एक गुणसूत्रीय व्यवस्था है जो मनुष्यों में अनायास उत्पन्न होती है और सीखने के तरीकों, शारीरिक लक्षणों और स्वास्थ्य पर अलग–अलग प्रभाव डालती है। दिसंबर 2011 में, संयुक्त राष्ट्र महासभा 21 मार्च को विश्व डाउन सिंड्रोम दिवस के रूप में घोषित किया गया।

21 मार्च: विश्व कविता दिवस

मानव मन की रचनात्मक भावना को पकड़ने की कविता की अद्वितीय क्षमता का सम्मान करने के लिए हर साल 21 मार्च को विश्व कविता दिवस मनाया जाता है। इस दिन को 21 मार्च को मनाने का निर्णय 1999 में पेरिस में यूनेस्को के 30वें सत्र में किया गया था।

22 मार्च: विश्व जल दिवस

हर साल 22 मार्च को विश्व जल दिवस मनाया जाता है मीठे पानी के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने और इसके टिकाऊ प्रबंधन की वकालत करने के लिए मनाया जाता है। रियो डी जनेरियो में पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यूएनसीईडी) ने इसे 1992 में मनाया था। उद्घाटन विश्व जल दिवस 1993 में मनाया गया था।

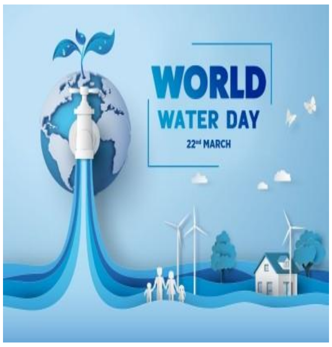

" त्वरित परिवर्तन" 2023 विश्व जल दिवस और उसी वर्ष विश्व शौचालय दिवस अभियान का विषय होगा

23 मार्च: विश्व मौसम विज्ञान दिवस

समाज की सुरक्षा और भलाई के लिए मौसम और जलवायु के महत्व पर ध्यान आकर्षित करने के लिए हर साल 23 मार्च को विश्व मौसम विज्ञान दिवस मनाया जाता है।

24 मार्च: विश्व टीबी दिवस

विश्व टीबी दिवस हर साल 24 मार्च को उस तारीख को मनाने के लिए मनाया जाता है जब डॉ. रॉबर्ट कोच ने माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस, बेसिलस जो टीबी का कारण बनता है, की खोज की घोषणा की थी। 1882. यह दिन लोगों को टीबी और दुनिया भर में इसके प्रभाव के बारे में शिक्षित करने के लिए मनाया जाता है

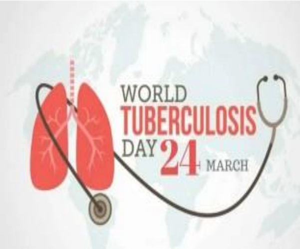

26 मार्च: 'पर्पल डे

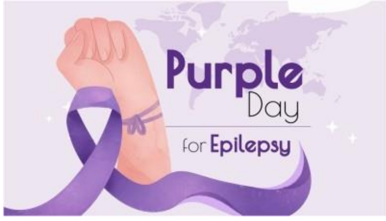

यह मिर्गी और लोगों के जीवन पर इसके प्रभावों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए 26 मार्च को मनाया जाता है। यह दिन मिर्गी पीड़ितों के लिए एक अनुस्मारक के रूप में भी कार्य करता है कि वे अकेले नहीं हैं।

पर्यावरण बचाओ संगठन (सेव द एनवायरनमेंट-एसटीई
(अनुसंधान, जागरूकता एवं सामाजिक विकास हेतु एक संस्था)

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

8 मार्च, 2023

प्रेरणा सम्मान के विजेता

दिनांक 12 मार्च , 2023; समय: प्रातः10:00 बजे से दोपहर 01 बजे तक

प्लैटफ़ार्म: गूगल मीट

संयोजक: डॉ० क्षिप्रा मिश्रा, अध्यक्ष: एसटीई,
पूर्व अपर निदेशक, डिपास, डीआरडीओ

सह संयोजक: डॉ० चंदा बासु, महासचिव, एसटीई

आयोजक सचिव: डॉ० एंजिलिना टाईटस, फार्म-डी इंटर्न, आजीवन सदस्य, एसटीई

डॉ० जिगनी मिश्राशए प्रोजेक्ट असोसीएटए आईएआरआईए आजीवन सदस्य एसटीई

एसटीई प्रेरणा सम्मान-2023 प्राप्तकर्ता:

डॉ०ज्योति शर्मा: वैज्ञानिक एफ़श एवं निदेशकए विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी विभागए भारत सरकार

डॉ० दीपाश्री दास सरकार: असोसिएट प्रोफेसर व विभागाध्यक्षए अंग्रेज़ी विभागए मार्गरीटा कॉलेजए असम

डॉ० बरनाली घटक: संस्थापक एवं प्रबंध निदेशक एसबीएचए एल्क्ट्रोक्लाउड प्राइवेट लिमिटेडए कोलकाता

यह कार्यक्रम सुबह 10:00 बजे आयोजक सचिव एंजेलिना टाइटस के स्वागत भाषण के साथ शुरू हुआ, जिसके बाद पर्यावरण बचाओ संगठनश की गतिविधियों पर आधारित एक वीडियो दिखाया गया। अंतर्राष्ट्रीय महिलाओं के लिए इस वर्ष का विषय था: ''आलिंगन समानता'' और डिजिटऑल ''लैंगिक समानता के लिए नवाचार और प्रौद्योगिकी'' था। मुख्य उद्बोधन डॉ. क्षिप्रा मिश्रा, अध्यक्ष, एसटीई का था। उन्होने विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

प्रथम प्रेरणा सम्मान पुरस्कार विजेता डॉ. ज्योति शर्मा थीं।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महिलाओं के प्रति उनके योगदान के लिए उनको ये सम्मान प्रदान किया गया। डॉ. ज्योति ने ग्रेजुएशन के बाद विज्ञान और प्रौद्योगिकी में अपने अनुभव से लेकर अब तक की अपनी यात्रा के बारे में श्रोताओं को प्रेरित किया। वे विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में युवा महिलाओं को प्रेरित करती हैं और सलाह देती रहती हैं।

द्वितीय प्रेरणा सम्मान पुरस्कार विजेता, श्रीमती दीपाश्री दास सरकार को असम की 18 विभिन्न जनजातियों में बालिकाओं को शिक्षित करने और सशक्त बनाने की दिशा में उनकी प्रमुख भूमिका हेतु प्रदान किया गया। श्रीमती सरकार ने अपना अनुभव साझा किया कि कैसे उन्होंने हजारों लड़कियों के जीवन में उन्हें मासिक धर्म स्वच्छता, घरेलू हिंसा और कानूनी मुद्दों के बारे में शिक्षित करने, बायोडिग्रेडेबल सूती सैनिटरी नैपकिन बनाने और बहुत कुछ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

तीसरी प्रेरणा सम्मान विजेता डॉ. बरनाली घटक थीं

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में समाज के प्रति उनके योगदान के लिए पुरस्कार दिया गया। डॉ. घटक ने अपनी उपलब्धियों के बारे में बात की जिससे भारत के किसानों, बिजली कर्मचारियों और कई अन्य लोगों को लाभ हुआ।

डॉ. ज्योति शर्मा

डॉ. दीपाश्री दास सरकार

डॉ० बरनाली घटक

ब्रह्माकुमारी एकता चल्गेरी द्वारा एक प्रेरक वार्ता का भी आयोजन किया गया। एकता **जी** ने हमें छोटी–छोटी चीजों की सराहना करने और हर चीज में सकारात्मकता लाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने हमें एक गतिविधि में भाग लेने और ध्यान करने के लिए भी प्रोत्साहित किया।

सत्र का समापन आयोजन सचिव डॉ. जिगनी मिश्रा के प्रेरक शब्दों और धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

झलकियाँ:

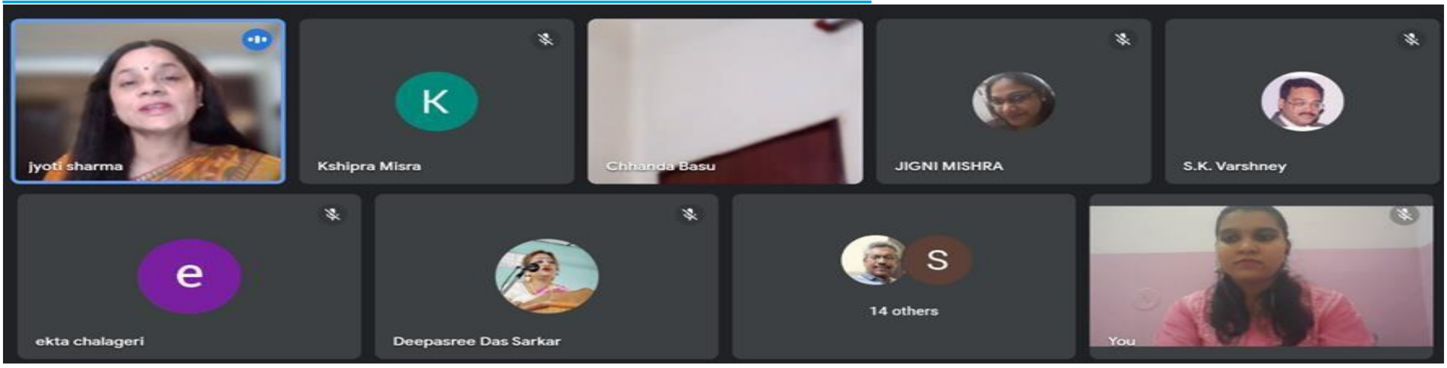

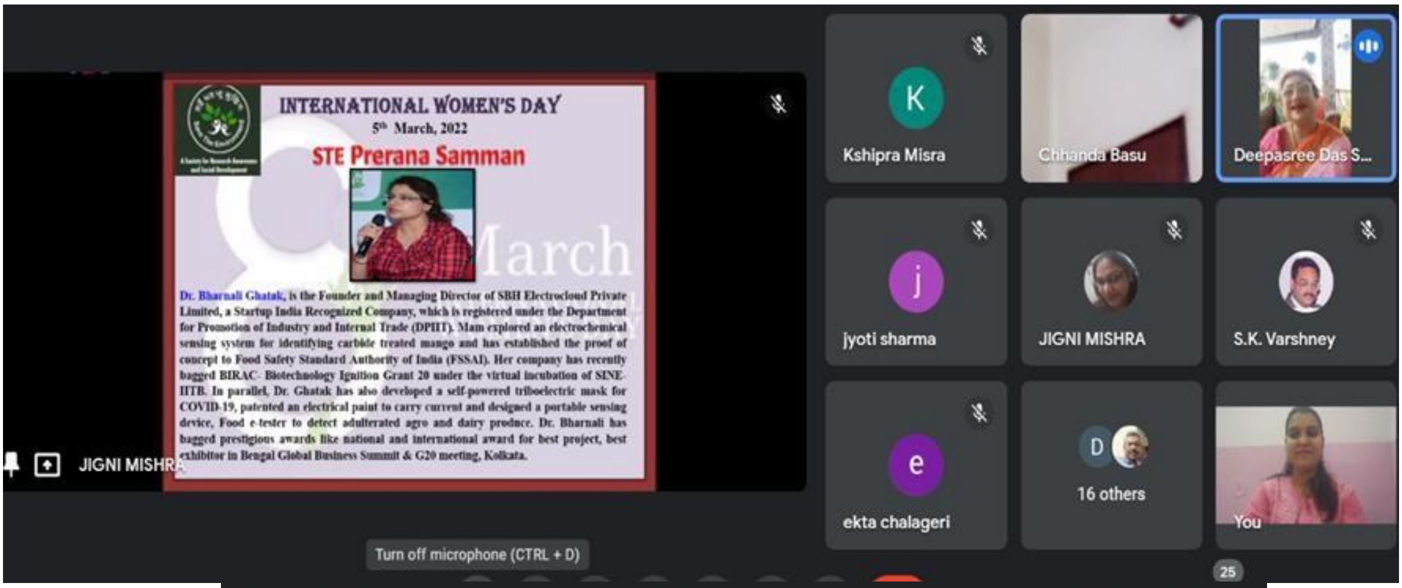

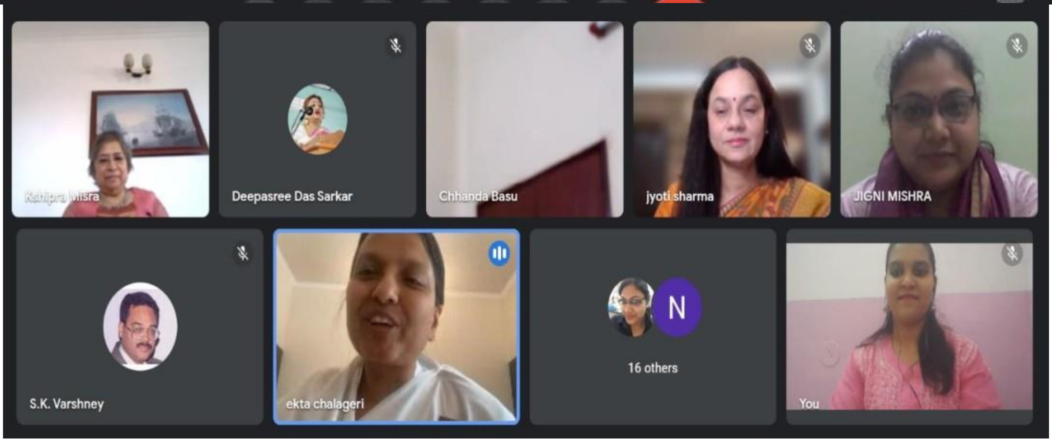

संपादक की कलाम से

प्रिय पाठकों

मैं एसटीई के प्रकृति संरक्षण के त्रैमासिक समाचार पत्र के खंड-4, अंक-1 में आपका स्वागत करती हूँ। यह अंक **ईवॉश संगोष्ठी-** के सफल आयोजन पर प्रकाश डालता है साथ ही अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस इत्यादि जैसे महत्वपूर्ण आयोजनों को भी संकलित करता है।

जनवरी से मार्च तक मनाये जाने वाले महत्वपूर्ण दिनों को भी इस अंक में सम्मिलित किया गया है। इस अंक में पर्यावरणीय मुद्दों पर आधारित लेख भी शामिल हैं। मैं उन सभी का आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने इस अंक को सफल बनाने के लिए ज्ञानवर्धक व प्रेरक लेख दिये हैं। मैं 'प्रकृति संरक्षण' को डिज़ाइन करने उर इसे वांछित आकार देने के लिए एसटीई की अध्यक्ष, डॉ० क्षिप्रा मिश्रा, संपादक मंडल एवं श्री ज्ञान कश्यप का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

डॉ० वैशाली मिश्रा

संपादक, एसटीई, समाचार पत्र

संपादक
डॉ० वैशाली मिश्रा
संपादक (अंग्रेज़ी), पर्यावरण बचाओ संगठन (एसटीई)
विभागाध्यक्ष, रसायन विभाग, आईटीएल पब्लिक स्कूल, द्वारका, नई दिल्ली
ई-मेल: drvaishalimishra2019@gmail.com
फ़ोन:+919868490662

सुश्री तृप्ति श्रीवास्तवा

संपादक (हिन्दी), पर्यावरण बचाओ संगठन (एसटीई)
सेवा निवृत्त, संस्कृत/हिन्दी शिक्षक, वसंत वेली स्कूल, नई दिल्ली
ई-मेल: tripti1179@gmail.com
फ़ोन:+919899224654

डॉ० एस.के. बासु
संपादक (अंग्रेज़ी एवं बंगाली)
पर्यावरण बचाओ संगठन (एसटीई)
पीएफएस, लेथ्ब्रिज,अल्बर्टा, कनाडा
ई-मेल: saikat.basu@alumni.uleth.ca फ़ोन: +1 (403) 894-4254

संपादक मंडल सदस्य
डॉ०क्षिप्रा मिश्रा, अध्यक्ष: पर्यावरण बचाओ संगठन (एसटीई)
पूर्व अपर निदेशक, डिपास, डीआरडीओ
ई-मेल: kmisra99@yahoo.com;
फ़ोन:9871372350

सुश्री मधु शर्मा
अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा सलाहकार-2009 से मध्य पूर्व , विशेष रूप से संयुक्त अरब अमीरात में ब्रिटिश कंपनियोंके लिए लीड और टीम इंस्पेक्टर के रूप में फ्रीलांसर के रूप में कार्यरत है। संस्थापक: ज्ञान ग्लोबल कंसलटेंसी
वैबसाइट: Website https://ggcindia.org. Mobile
ई-मेल: madhusharma227@gmail.com:
Madhu. Sharma@education- consultant.in
फ़ोन: 9849077963

डॉ० जिगनी मिश्रा,
प्रोजेक्ट असोसीएट, आईएआरआई,
आजीवन सदस्य, एसटीई
Email: jignimishra@gmail.com
Phone: +918447522389

डॉ० अनुजा भारद्वाज
आजीवन सदस्य, एसटीई
ई-मेल: anujabhardwaj75@gmail.com
फ़ोन: +91-9971544026

‘इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एनवायरनमेंट एंड हेल्थ साइंसेज’

हेतु लेख आमंत्रित हैं

यह पत्रिका पर्यावरण बचाओ संगठन (सेव द एनवायरनमेंट-एसटीई) द्वारा प्रकाशित की जा रही है। अपने अनुसंधान संबंधित लेख समीक्षा हेतु ई-मेल द्वारा भेजें। लेखकों को अपने अग्रेषण पत्र में पता, संपर्क नंबर और ई-मेल आईडी का उल्लेख करना होगा। प्रकाशन से पहले प्रमाण सुधार हेतु भेजा जायेगा। लेखकों द्वारा मौलिकता की प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर किए जाएं।

हमें यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एनवायरनमेंट एंड हेल्थ साइंसेज के लिए डीओआई उपसर्ग अब आधिकारिक डिजिटल ऑब्जेक्ट आइडेंटिफ़ायर (डीओआई) क्रॉसरेफ से उपलब्ध है। पत्रिका अब अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक अनुक्रमण (आईएसआई) में अनुक्रमित है।

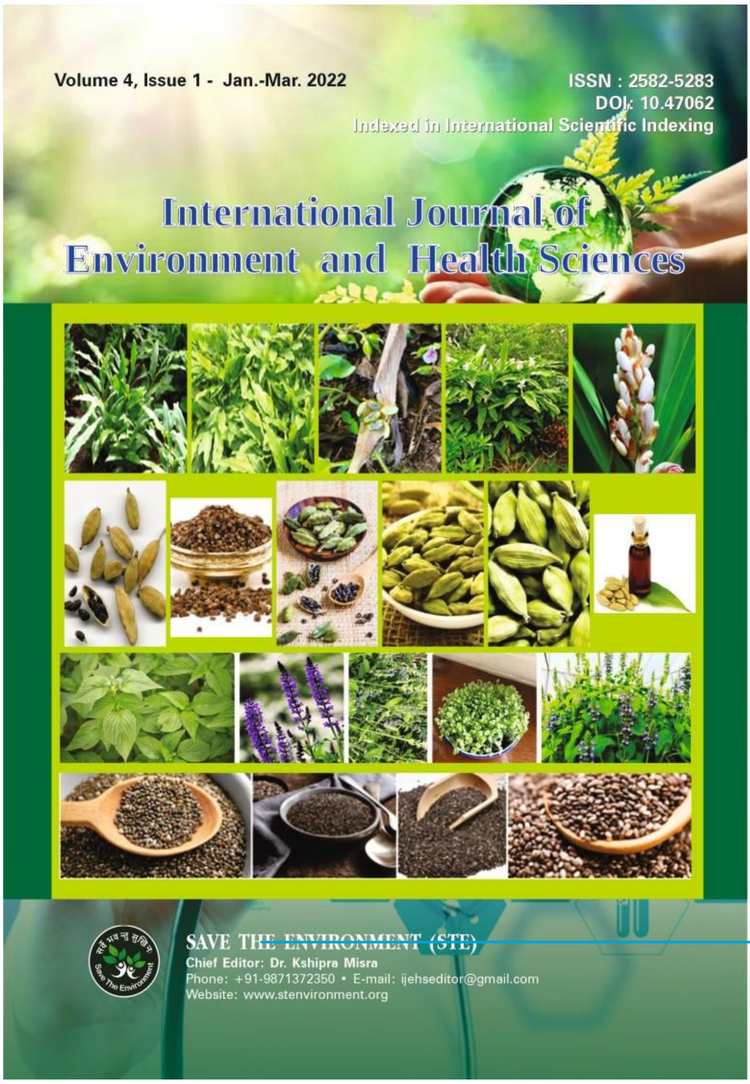

अधिक जानकारी हेतु ,कृपया मुख्य संपादक से संपर्क करें:

ijehseditor@gmail.com

अथवा

हमारी वैबसाइट पर देखें:

www.stenvironment.org

ONLINE CERTIFICATE COURSE ON ENVIRONMENT AWARENESS

COURSE DETAILS

Course name: Certificate in Environment Education & Awareness (CEEA)
Course no: EEA-01-2023
Organization: Hindu College & Save the Environment (STE)
Course fee: Rs. 2,500/-
Class format: Online
Course duration: 6 weeks
Number of lectures: 12
Days of classes: Weekends (Saturdays & Sundays)
Class timing: 5-7 pm
Class duration: Approximately 1.5-2 hours (online).
A one-hour lecture by the teacher(s) followed by
15-20 mins of question/answer sessions and discussion with students/participants.
Language: English

Instructions to join the Course:

After reading the information carefully, please fill out the registration form. The link is given below.
https://forms.gle/zWtsvat8Zq8jVwDz7

The last date to receive the registration form is the 15th **of June 2023, at 11:59 PM.**
The course will begin on the 1st **of July 2023, at 5:00 PM.**

CELEBRATING 125 YEARS
Steered by the Past, Moulding the Future

HC HINDU COLLEGE, DELHI

सर्वे भवन्तु सुखिनः Save The Environment

एसटीई वार्षिक पुरस्कार 2023

(नामांकन एवं आवेदन आमंत्रित हैं)

अंतिम तिथी 31 जुलाई 2023

एसटीई के वार्षिक पुरस्कार किसी व्यक्ति या संस्थान द्वारा किए गए योगदान की उत्कृष्टता को दर्शाने के लिए एक प्रतीक हैं। इससे उन योगदानकर्ताओं का उत्साह बढ़ता है, जिन्होंने समाज के लिए कुछ लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में अपनी उत्कृष्टता, विशेषज्ञता और दृष्टिकोण के साथ विज्ञान और सामाजिक सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में योगदान दिया है। ऐसी असाधारण गतिविधियों की मान्यता अंततः उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने और विज्ञान और समाज के लिए उन्होंने जो किया है उसके लिए उन्हें सम्मानित करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण **कदम** है।

एसटीई ऐसी प्रतिष्ठित हस्तियों को निम्नलिखित श्रेणियों के पुरस्कार और सम्मान प्रदान करता है:

(एसटीई) डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम पुरस्कार
(एसटीई) डॉ. प्रलॉय ओ बसु लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार
(एसटीई) इंटरनेशनल अचीवर पुरस्कार
(एसटीई) फेलोशिप पुरस्कार
(एसटीई) ग्रीन एक्सीलेंस पुरस्कार
(एसटीई) अकादमिक और अनुसंधान में उत्कृष्टता के लिए मेधावी पुरस्कार
(एसटीई) जल पुरस्कार
(एसटीई) महिला उत्कृष्टता पुरस्कार
(एसटीई) पर्यावरण के लिए सर्वश्रेष्ठ विचारध्नवाचारध्प्रौद्योगिकी पुरस्कार
(एसटीई) युवा शोधकर्ता (संकाय) पुरस्कार
(एसटीई) युवा शोधकर्ता पुरस्कार
(एसटीई) सर्वश्रेष्ठ स्कूल प्रिंसिपल पुरस्कार

अधिक जानकारी हेतु , हमारी वैबसाइट पर देखें:
www.stenvironment.org/ste-awards/

यदि आप हमारी विचारधारा में विश्वास करते हैं और पर्यावरण के लिए कदम उठाना चाहते हैं, तो हम आपका हमारे संगठन में शामिल होने के लिए स्वागत करते हैं और साथ मिलकर हम पर्यावरण को बचा सकते हैं ।

Visit- https://stenvironment.org/

लिंक का अनुसरण करें, सदस्यता चुनें और फॉर्म भरें।

डॉ. वैशाली मिश्रा
संपादक (अंग्रेजी), (एसटीआई)
ई–न्यूजलेटरEmail:
vmishraitl@gmail.com

श्रीमती तृप्ति श्रीवास्तव
संपादक (हिन्दी),
(एसटीआई) ई–न्यूजलेटर
Email: tripti1179@gmail.com

डॉ. एस. के. बसु
संपादक (अंग्रेजी और बंगाली)
सेव द एनवायरनमेंट एनजीओ
पीएफएस, लेथब्रिज अल्बर्टा
कनाडा
Email: saikat.basu@alumni.uleth.ca
Mobile No: +1 (403) 894-4254

पर्यावरण बचाओ संगठन (सेव द एनवायरनमेंट-एसटीई
(अनुसंधान, जागरूकता एवं सामाजिक विकास के पथ हेतु एक संस्था)
मुख्य एवं पंजीकृत कार्यालय: 12, डायमंड हार्बर रोड,
कोलकाता-700063
मोबाइल:
फ़ोन: 9871372350, 9830779260
ई-mail: save1990env@yahoo.co.in; info@stenvironment.org,
वेबसाइट: www.stenvironment.org